वर्ष 47 अंक 3 मार्च 2020

हँसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

• वर्ष 47 • अंक 03 • मार्च 2020 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
11. समाचार
20. क्या आप जानते हैं?
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

7. परीक्षा
: गफूर 'स्नेही'

7. अगली कक्षा में जाना है
: शिवनारायण सिंह

17. दो बाल कविताएं
: हरजीत निषाद

29. बाल मुक्तक
: डॉ. सुरेश उजाला

29. बाग
: हरप्रसाद रोशन

31. भालू
: डॉ. परशुराम शुक्ल

31. ऊँट
: दिनेश विजयवर्गीय

41. होली के अलबेले रंग
: महेन्द्र कुमार वर्मा

41. होली आई
: सुनील कुमार शर्मा

कहानियां

8. दादा जी, यह घण्टी सम्भालकर रखना
: सी. एल. गुलाटी

18. गलती का एहसास
: मीरा सिंह 'मीरा'

22. रंग में भंग
: महेन्द्र सिंह शेखावत

24. शरारत छुट गई
: मुमताज हसन

27. नहीं खेलूंगी ऐसी होली
: डॉ. देशबन्धु

39. दौलत सच्चाई की
: दीपांशु जैन

46. होली-सफाई
: डॉ. सेवा नन्दवाल

विशेष/लेख

16. होली का अर्थ
: विनोद कुमार

21. विदेशों में भी मनाते हैं होली
: चन्द्रभान

23. अब पेड़ पर पैदा होगी बिजली
: किरण बाला

26. जलकाग
: डॉ. परशुराम शुक्ल

30. वैज्ञानिक जानकारी
: विद्या प्रकाश

32. जिराफ
: अंकुर श्रीश्रीमाल

42. गायक पक्षी
: किरण बाला

उचित व्यवहार करें

हम सभी बातचीत करते हैं। अपनी बात को बताने के लिए संवाद करना आवश्यक होता है। संवाद हम तभी कर सकते हैं जब हमें बोलना आता हो। अगर हमें बोलना नहीं आता तो हम बोलना सीखते हैं। जब हमारा जन्म हुआ था, हम उस समय से ही बोल रहे हैं। उस समय हम हर बात का संवाद रोकर ही करते थे। दर्द का एहसास हो तो रोकर, भूख लगे तो रोकर और किसी की बात या भाव बुरे लगे तो भी रोकर ही अपनी बात समझाते रहे हैं। इस प्रकार अगर हमें बोलना नहीं भी आता हो तब भी अपनी बात को प्रेषित किया जाना हम जन्म के साथ ही सीख जाते हैं।

फिर हम बड़े होते हैं तब हम रोकर अपनी बात को नहीं कहते क्योंकि हम कुछ शब्दों को सीख जाते हैं। अपनी तोतली और मधुर वाणी से सभी को मोहित भी करते हैं। धीरे-धीरे हमें अपनी भाषा का ज्ञान होना आरम्भ हो जाता है और हम अपनी बात को बोलकर सभी को समझा सकते हैं। इसी भाषा के द्वारा हम पढ़ाई करते हैं, काम-काज करते हैं। ये ही शब्द, भाषा का ज्ञान हमारे बोलचाल में प्रकट होने लगते हैं। इन्हीं शब्दों का प्रयोग हमारे हर कार्य को सम्भव करने लगते हैं और कभी-कभी इनका उचित प्रयोग न होने पर ये झगड़े या क्रोध का कारण भी बनते हैं और हमारे कार्य को बिगाड़ने का कारण भी हो जाते हैं।

हमें बोलना तो बचपन से ही सिखाया जाता है परन्तु क्या बोलना है, कैसे बोलना है, कितना बोलना है, किस कारण से बोलना है और क्यों बोलना है, इसे हम अपनी-अपनी समझ से, अपनी-अपनी लाभ-हानि से, अपने हित या स्वार्थ से जोड़कर ही बोलते हैं।

सोचने का विषय यह है कि हम स्वार्थ, लोभ, द्वेष इत्यादि को इतनी महत्ता देते हैं कि हमारे बोल बिगड़ जाते हैं और इस बात का एहसास ही नहीं रहता कि हमें क्या बोलना है और क्या नहीं बोलना? किस लहजे में बात करनी है या नहीं करनी? किसी का अपमान या सम्मान सभी कुछ स्वार्थ की अग्नि में स्वाहा हो जाता है। यह बात भी सत्य है कि जब से हम संसार में आए, अपने परिवार में आए हमें कभी भी इस तरह के आचरण का तरीका नहीं सिखाया गया। माता-पिता, गुरुजन सभी ने प्रेम से रहने का, मिल-जुलकर हर कार्य करने का उपदेश दिया है और इसी तरह की शिक्षा भी दी है। सभी का सम्मान करना, अपने साथियों की सहायता करना, ध्यान रखना, आज भी हमें सिखाया जाता है परन्तु या तो हम सीखना नहीं चाहते या हमारी बुद्धि हमारा साथ नहीं देती परन्तु हम इतने भी बुद्धि से हीन या कमजोर नहीं हैं कि यह बात हमें समझ नहीं आती। अगर हमें अवसर मिले तो हम अपने-आपको अन्य लोगों से उत्तम, श्रेष्ठ, समझदार, योग्य एवं महत्वपूर्ण बताने में जरा भी संकोच नहीं करते। हम अनेकों से अधिक अच्छा, मधुर और मनमोहक संवाद भी कर लेते हैं, बड़ी से बड़ी बातें भी कर लेते हैं।

बड़ी-बड़ी बातें कर लेना हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा तो बन जाता है परन्तु इसके साथ ही हम छोटी-छोटी चीजों को समझने की अपेक्षा उनको नजरअन्दाज कर देते हैं जबकि हम छोटी-छोटी बातों को समझकर ही बड़े हुए हैं। उदाहरणत: किसी को आदर से सम्बोधित करने से हमारा कुछ बिगड़ नहीं जाएगा परन्तु जिसके भी साथ हम आदर, सम्मान से बात करेंगे उसके हृदय में हमारे लिए सम्मान तो बढ़ेगा ही साथ ही उस व्यक्ति का प्रेम एवं शुभकामनाएं भी मिलेगीं। वह व्यक्ति हमारा परिवार का सदस्य भी हो सकता है और मित्र भी। इस तरह के अन्य गुण भी हमारे व्यवहार का हिस्सा बनेंगे तो हम अनायास ही सबके प्रति प्रेमपूर्वक एवं उदारशील भी हो पाएंगे और जैसा व्यवहार हम औरों के साथ करेंगे वैसा व्यवहार ही हमारे साथ होगा इसलिए हमें सावधान एवं सजग रहना होगा कि हमारा व्यवहार उचित हो ताकि हमारे सामने अनुचित कुछ न आए।

जाने-अन्जाने में अगर हमने किसी को स्वार्थवश भला-बुरा कह दिया हो, किसी का दिल दुखाया हो या अन्य किसी भी कारण से कटुता आ गई हो तो उसे होली के रंग में धो डालें। इसी से परिपक्वता प्रकट होती है। मित्रों एवं छोटे-बड़े सबको किसी की भी भूल हो उसे भुलाकर सबकी शुभकामनाएं प्राप्त करें और शुभकामनाएं ही दें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 218

मुशकल है कि बन्दा कोई तेरी रहमत दे गुण गाए।
मुशकल है कि बन्दा कोई तेरे भाणे नूं अज़माए।
मुशकल है कि बन्दा कोई मुनकर होवे ते सुख पाए।
मुशकल है कि बन्दा कोई बाझ गुरु दे बख़्शया जाए।
कखां दे अम्बार होण जे इक चिणंग चा करदी ढेरी ए।
कहे अवतार कणी बख़्शिश दी पापां लई बथेरी ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा दया और करुणा से भरा हुआ है। हर मानव पर इसकी रहमतों की वर्षा हो रही है। इन्सान परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। प्रभु ने इसके जीवनयापन के लिए पानी, हवा, भोजन, फल सब कुछ बनाया है। इसने इन्सान को इतना कुछ दिया है कि इसकी रहमतों का गुणगान कर पाना आसान नहीं है। परमात्मा की इच्छा से ही संसार में सब कुछ चल रहा है। हमें प्रभु की इच्छा, इसकी मर्जी के अन्दर रहना आ जाए, इसके भाणें में रहना आ जाए यही सबसे मुश्किल काम है। परमात्मा की मर्जी को स्वीकार करने वाला, इसके विचारों के साथ चलने वाला ही संसार में सुख पाता है। परमात्मा के प्रति विपरीत भाव रखने वाला, इसके उलट विचार रखने वाला सुख पाए यह मुश्किल है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान गलतियों से भरा हुआ है। इन्सान जीवन में कितने ही बुरे कर्म करता जाता है। वह अपने पापों को लगातार बढ़ाता जाता है। पापी व्यक्ति को सद्गुरु के अलावा अन्य कोई क्षमा नहीं करता। सद्गुरु के अलावा उन्हें बख्शने वाला कोई नहीं है। सद्गुरु के पास इतनी दयालुता होती है कि वह पाप कर्म करने वालों को क्षमा कर देता है। उनके अवगुणों को न देखते हुए उनके प्रति दया वाला भाव ही अपनाता है। क्षमा करने का काम हमेशा सद्गुरु ही करता आया है। सद्गुरु के पास ज्ञान की शक्ति होती है। पाप का बहुत विशाल ढेर भी क्यों न हो सद्गुरु की कृपा की एक छोटी-सी बूंद ही उन समस्त पापों को समाप्त कर देती है। हम देखते हैं कि आग की एक चिंगारी कितना बड़ा काम कर जाती है। वह चिंगारी देखने में तो कण जैसी होती है लेकिन उसमें लाखों टन लकड़ी को जलाकर समाप्त कर देने की ताकत होती है। इसी तरह पाप कर्मों का भले ही कितना बड़ा ढेर हो, गुरु की बख़्शिश की एक चिंगारी ही उस विशाल ढेर को जलाकर राख कर देती है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि सद्गुरु गुणों के भण्डार हैं, रहमतों के सागर हैं। दया और परोपकार करने वाले हैं। ऐसे बख़्शनहार सद्गुरु की रहमतों का गुण गाना इन्सान के लिए संभव नहीं है। दयालु सद्गुरु की हर इच्छा को स्वीकार करना ही अच्छा है। इसके विपरीत भाव अपनाकर तो केवल दुख ही मिल सकता है, सुख नहीं। हमें अच्छे काम करने की ओर आगे बढ़ना है। प्रभु की मर्जी में रहकर जीवन जीना है। इसकी आज्ञा के विपरीत कभी नहीं जाना बल्कि बख़्शनहार सद्गुरु की शरण में आकर इसकी कृपा का पात्र बनना है।

संग्रहकर्ता : प्रियंका चोटिया 'आंचल' (हनुमानगढ़)

अनमोल वचन

- ★ गुरुजन रास्ता दिखाते हैं, चलना आपको स्वयं पड़ता है।
- ★ इस धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो वह है माँ के चरणों में।
- ★ मूर्खों से प्रशंसा के राग सुनने की अपेक्षा बुद्धिमान व्यक्ति की फटकार सुनना अधिक श्रेयस्कर है।
- ★ समझदारी का एक लक्ष्य यह है कि दुस्साहस न करे।
- ★ मानव जितना महान होगा उतना ही नम्र होगा।
- ★ सुन्दर सदा शुभ नहीं होता, किन्तु शुभ सदा सुन्दर होता है।
- ★ यदि आदमी सीखना चाहे तो उसकी हरेक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।
- ★ अग्नि स्वर्ण की परीक्षा करती है और प्रलोभन सच्चे मानव की।
- ★ शिष्टता ही व्यवहार का सौन्दर्य है।
- ★ शुभ कर्मों से शक्ति बढ़ती है।
- ★ आदर्शवादी व्यक्ति वह है जो दूसरों की समृद्धि में सहायक हो।
- ★ बिना निराश हुए पराजय को सह लेना, पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है।
- ★ अपवित्र कल्पना भी उतनी ही घातक है जितना की अपवित्र कर्म।
- ★ प्रशंसा के भूखे यह साबित कर देते हैं कि वे योग्यता में कंगाल हैं।
- ★ अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है।
- ★ पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है।
- ★ निरन्तर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता।
- ★ सत्यपरायण मनुष्य किसी से घृणा नहीं करता।
- ★ सर्वत्र स्वार्थ-सिद्धि का स्वप्न देखने वाला एक दिन अवश्य ही अपने यश और सम्मान से हाथ धो बैठता है।
- ★ ज्ञान धन से उत्तम है क्योंकि धन की रक्षा तो तुम्हें करनी पड़ती है परन्तु तुम्हारी रक्षा ज्ञान करता है।
- ★ किसी भी महान कार्य के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता आत्मविश्वास की है।
- ★ मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है– मानव की सेवा।
- ★ बहुत बोलने के बजाय बहुत सुनना अधिक अच्छा है।
- ★ हम जितना अधययन करेंगे उतना ही हमें अपने अज्ञान का बोध होता जाएगा।
- ★ जीवन में दुख और सुख तो आते ही रहते हैं परन्तु जो अपना धैर्य खो बैठता है वह अपना सब कुछ खो बैठता है।
- ★ अच्छे मित्र व अच्छा चरित्र व्यक्ति को उन्नति की ओर ले जाते हैं।
- ★ जीवन के तीन मंत्र– आनन्द में वचन मत दीजिये, क्रोध में उत्तर मत दीजिये, दुख में निर्णय मत लीजिये।
- ★ मनुष्य को अपने लक्ष्य में कामयाब होने के लिए खुद पर विश्वास होना बहुत जरूरी है।

कविता : गफूर 'स्नेही'

परीक्षा

बच्चों हो जाओ चार्ज,
आ गया माह ये मार्च।
परीक्षा से है सामना,
कलम किताब है थामना।।

प्रश्न-पत्र को आगे ढाल,
जवाब देने हैं तत्काल।
रूकना न झिझकना है,
सदैव आगे रहना है।।

गुरुओं ने समझाया,
तरीका हर एक सिखलाया।
फिर भय, कैसा डर?
रहे क्यों पीछे हटकर।।

योद्धा बन जाएं जूझ,
कायम रखें समझ बूझ।
ऐसा न हो, पड़े न सूझ,
परीक्षा न पहेली अबूझ।।

कविता : शिवनारायण सिंह

अगली कक्षा में जाना है

घड़ी परीक्षा की आयी,
तो कैसा रे घबराना है।
पढ़ने-लिखने के बल पर,
अगली कक्षा में जाना है।।

खेल-कूद में तनिक न हमको,
अब रे वक्त गंवाना है।
पढ़ने-लिखने के बल पर,
अगली कक्षा में जाना है।।

वक्त बड़ा अनमोल,
समय को हमने अब पहचाना है।
पढ़ने-लिखने के बल पर,
अगली कक्षा में जाना है।।

पढ़ना है बस मनोयोग से,
हमको अव्वल आना है।
पढ़ने-लिखने के बल पर,
अगली कक्षा में जाना है।।

प्रेरक-प्रसंग : सी. एल. गुलाटी, सचिव (सं.नि.मं.)

दादा जी, यह घण्टी सम्भालकर रखना

गणपत राय नामक एक व्यक्ति बहुत अमीर था। वह बहुत बड़े बंगले में रहता था। उसका कारोबार बहुत अच्छा था। उसे हर प्रकार की सुख-सुविधाएं उपलब्ध थीं। समाज में उसका स्थान प्रभावशाली होने के कारण उसका हर तरह से सम्मान किया जाता था। ये सब कुछ होते हुए भी उसका मन बड़ा गमगीन-सा रहता था क्योंकि उसके घर में संतान नहीं थी और अन्दर ही अन्दर उसे लगता था कि उसके जाने के बाद ये सारी सम्पत्ति और ठाट-बाट कौन संभालेगा।

कई प्रकार के इलाज और साधु-संतों के आशीर्वाद के बाद उसके घर एक सुन्दर बच्चे ने जन्म लिया। जिसका गणपत राय ने बड़े लाड-प्यार से पालन-पोषण किया। उस बच्चे को वह अपने जीवन का सहारा मानने लगा और बड़ा होने पर धीरे-धीरे सारी जायदाद उसको सौंप दी।

समय आने पर बच्चे की शादी भी बड़ी धूमधाम से की गई और गणपत राय प्रफुल्लित खानदानी घराने के सपने देखने लगा परन्तु आने वाली बहू ने उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया क्योंकि वह अपने कर्तव्यों को निभाने की बजाय अपने अधिकार प्राप्त करने में चतुर निकली। बात-बात पर झगड़ा करना, कदम-कदम पर बेइज़्ज़ती करना उसका स्वभाव बन गया। उसका पति शाम को जब अपने कारोबार से वापिस घर लौटता तो अपने सास-ससुर के प्रति उसके कान भरकर अपने पति की नींद भी हराम कर देती थी।

उसके व्यवहार से गणपत राय बड़ा लाचार हो गया और उसका बेटा भी मजबूर-सा रहने लगा। न चाहते हुए भी वह अपनी पत्नी के चंगुल में फंस गया और अकस्मात् ही उन्होंने यह फैसला किया कि

उनके रिहायशी बंगले के कोने में जो अलग कमरा बना हुआ है वहाँ पर दोनों बुजुर्ग गणपत राय और उसकी पत्नी रहा करेंगे तथा उनके काम नौकर किया करेंगे। गणपत राय और उसकी धर्मपत्नी को सुबह, दोपहर और शाम अलग कमरे में नियमित रूप से खाना भेज दिया जाता था। अगर उनको किसी और चीज की जरूरत पड़ती तो वह भी उनके पास पहुँचा दी जाती थी। इसके लिए कमरे में एक घंटी रख दी गई जिसको बजाने पर नौकर उनकी बात सुनने के लिए आ जाता था।

समय बीतता गया। गणपत राय के परिवार में पोते ने जन्म लिया। उसका भी बड़े लाड-प्यार से पालन-पोषण होने लगा। जब उसने कुछ होश संभाली तो उसने पिता से बंगले के कोने में रह रहे गणपत राय और उसकी पत्नी के बारे में पूछा जो वास्तव में उसके दादा-दादी थे। उसके पिता ने कहा कि ये मेरे माता-पिता हैं। यह सुनकर बच्चे ने अपने दादा-दादी के पास जाकर उठना, बैठना व खेलना शुरू कर दिया लेकिन उसकी माँ को यह अच्छा नहीं लगता था। एक दिन शाम को जब उसका पिता अपने कारोबार से वापस आया तो बच्चे ने कहा– 'पिता जी, आप अपने माता-पिता से मिलने क्यों नहीं जाते? उनको अलग कमरे में क्यों रखा हुआ है? उनको आप अपने साथ इस बड़े घर के अन्दर क्यों नहीं रहने देते?' ये बातें जब बच्चे ने पिता से कही तो उस समय बच्चे की माँ माथे के ऊपर तेवर बनाकर उसकी बातें सुन रही थी। बच्चे के माता-पिता ने एक-दूसरे को भली-भांति देखा और बच्चे की भावना को भी सुना। उसकी माता ने तो साफ इन्कार कर दिया कि वह उस कोने वाले कमरे में नहीं जायेगी जहाँ उसके सास-ससुर रहते हैं। पिता को किसी तरह से बच्चे ने मना लिया कि वह बुजुर्ग माता-पिता के पास उसके साथ जाये और यदि सम्भव हो तो उनको बंगले के अन्दर कोई अच्छा-सा कमरा दे दें।

बच्चा अपने पिता को साथ लेकर दादा-दादी के पास गया। थोड़ी देर बैठने के बाद पिता को वहीं रहने के लिए कहा और खुद दौड़ा-दौड़ा अपनी

मम्मी के पास आया। बच्चा मम्मी को कहने लगा– ''मम्मी आप भी उस कमरे में चलो जहाँ दादा-दादी जी बैठे हुए हैं। अगर आप मेरे साथ नहीं चलोगे तो मैं वहाँ जाकर फिर कभी इधर आपके पास नहीं आऊंगा।'' बच्चे की जिद (हठ) को देखकर बेदिली से उसकी मम्मी उस कमरे में चली गई जहाँ उसके सास-ससुर बैठे हुए थे। वहाँ पहुँचते ही बच्चा अपने दादा और दादी जी के साथ घुल-मिलकर खेलने लगा और अपने मम्मी-पापा से कहने लगा– ''आप मेरे दादा-दादी को घर के अन्दर ले चलो।'' उसके मम्मी-पापा काफी समय तक चुप रहे। जब उनसे कोई उत्तर नहीं मिला तो बच्चे ने वहाँ पड़ी हुई घंटी अपने हाथ में लेकर अपने दादा-दादी जी से कहा– ''देखो आप इस घंटी को कहीं गुम न कर देना, इसको सम्भाल कर रखना क्योंकि जब मेरे मम्मी-डैडी बुजुर्ग होंगे और मैं इनको इस कमरे में भेजूंगा तो यही घंटी इनके काम आयेगी।'' बच्चे की यह बात सुनकर न केवल दादा-दादी हैरान हुए बल्कि बच्चे के माता-पिता के पैरों के नीचे से जमीन निकल गई कि बच्चे ने यह क्या कह दिया। इससे उनका आने वाला दर्दनाक समय उनकी आँखों के सामने से गुजरने लगा। अपनी गलती का उन्होंने बहुत पश्चाताप किया और बच्चे के हाथ से घंटी लेकर बोले कि क्या तू बड़ा होकर हमें इस तरह से अलग कमरे में रखेगा। हम तो इस घंटी को अभी बाहर फेंकने लगे हैं। तुम अपने दादा-दादी को लेकर अन्दर चलो, जो कमरा तुम उचित समझते हो या इनको ठीक लगता है ये उसे ले लें। हम इनका पूरा सत्कार करेंगे, इनकी आज्ञा का पालन करेंगे। तुमने हमारी आँखों की पट्टी हटा दी है कि अगर हम अपने माता-पिता के साथ ऐसा व्यवहार करेंगे तो कल को तुम भी हमें भी ऐसी दशा में धकेल सकते हो। इस भय के कारण उन्होंने सभी बातें स्वीकार कीं और आगे के लिए माता-पिता की वैसे ही पूर्ण रूप में सेवा की जैसे आमतौर पर इन्सान अपने साथ सलूक करवाना चाहता है। उनको यथार्थ रूप में स्पष्ट हो गया कि अगर हम अपने इस नन्हें बच्चे की मौजूदगी में अपने बुजुर्गों का सत्कार नहीं करेंगे, उनको किसी प्रकार की कोई परेशानी देंगे तो बच्चा उससे भी बुरा व्यवहार हमारे साथ कर सकता है। इसलिए भलाई इसी में है कि हम अपने उजले भविष्य के लिए बुजुर्गों के साथ ऐसा व्यवहार करें कि कल को हमारे बच्चे भी हमें सत्कार दे पायें।

मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन से पहले ISRO महिला रोबोट 'व्योममित्र' को अंतरिक्ष की सैर कराएगा

भारत दिसम्बर 2021 में अंतरिक्ष में अपने पहले मानव मिशन की योजना पर काम कर रहा है। इससे पहले भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) प्रायोगिक रूप से भेजे जाने वाले मानव रहित गगनयान में महिला रोबोट 'व्योममित्र' को भेजेगा।

इस रोबोट का नाम संस्कृत के दो शब्दों व्योम (अंतरिक्ष) और मित्र (दोस्त) को मिलाकर 'व्योममित्र' दिया गया है। कार्यक्रम में मौजूदा लोग उस समय आश्चर्यचकित रह गए जब व्योममित्र ने अपना परिचय दिया।

रोबोट ने कहा– 'सभी को नमस्कार। मैं व्योममित्र हूँ और मुझे अर्ध मानव रोबोट के नमूने के रूप में पहले मानवरहित गगनयान मिशन के लिए बनाया गया है।' मिशन में अपनी भूमिका के बारे में व्योममित्र ने बताया– 'मैं पूरे यान के मापदंडों पर निगरानी रखूंगी, आपको सचेत करूंगी और जीवनरक्षक प्रणाली का काम देखूंगी। मैं स्विच पैनल के संचालन सहित विभिन्न काम कर सकती हूँ।' रोबोट ने बताया कि वह अंतरिक्ष यात्रियों की अंतरिक्ष में साथी होगी और उनसे बात करेगी। व्योममित्र ने बताया कि वह अंतरिक्ष यात्रियों की पहचान करने सहित उनके सवालों का जवाब देगी।

इसरो प्रमुख के सिवन ने पत्रकारों को बताया कि ह्यूमननॉयड (मानव की तरह रोबोट) अंतरिक्ष में इंसानों की तरह काम करेगी और जीवन प्रणाली के संचालन पर नजर रखेगी।

सिवन ने कहा– 'यह अंतरिक्ष में इंसानों की तरह काम करेगी। यह जांच करेगी कि सभी प्रणालियां ठीक ढंग से काम कर रही हैं। यह बहुत लाभदायक होगा।' इससे पहले उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सिवन ने कहा कि दिसम्बर 2021 में भारत के मानव मिशन को अंतरिक्ष में भेजने से पहले इसरो दो मानव रहित मिशन क्रमशः दिसम्बर 2020 और जून 2021 में भेजेगा।

वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में पैदा किया कृत्रिम भूकंप, पहली परत का मूवमेंट भूकंप जैसा

बेंगलूरु। भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) की प्रयोगशाला में वैज्ञानिकों ने भूकंप जैसी परिस्थितियां उत्पन्न की हैं। शोधकर्ताओं के इस प्रयास से प्रयोगशालाओं में भूकंप का अध्ययन आसान हो गया है।

आईआईएससी में भौतिकी विभाग के मानद प्रो. सूद ने बताया कि जैल से बनी शीट को दो प्लेटों के बीच रख ऊपर वाली प्लेट को बहुत कम बल के साथ निरंतर घुमाया गया। पदार्थ की पहली परत का मूवमेंट बिल्कुल उसी तरह था जैसा भूकंप के दौरान होता है। इससे जो आंकड़े मिले वह भूकंप के दौरान सिस्मोग्राफ से मिलने वाले आंकड़ों से हू-बू-हू मेल खाते हैं। इससे पता चला कि जब किसी पदार्थ पर एक निश्चित बल लगाकर निरंतर तनाव पैदा करते हैं तो वह किस तरह खुद को समायोजित करता है और उसमें कैसे बदलाव आते हैं।

ठोस पदार्थों का कर रहे उपयोग

प्रयोगशालाओं में भूकंप के अध्ययन के लिए शोधकर्ता अभी तक चट्टानों या सेरेमिक जैसे ठोस पदार्थों का उपयोग करते रहे हैं। ऐसे प्रयोगों में बल लगाकर उन्हें तोड़ा जाता है या उनमें दरारें पैदा कर भूकंप को समझने की कोशिश हुई है।

– संकलन : बबलू कुमार

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

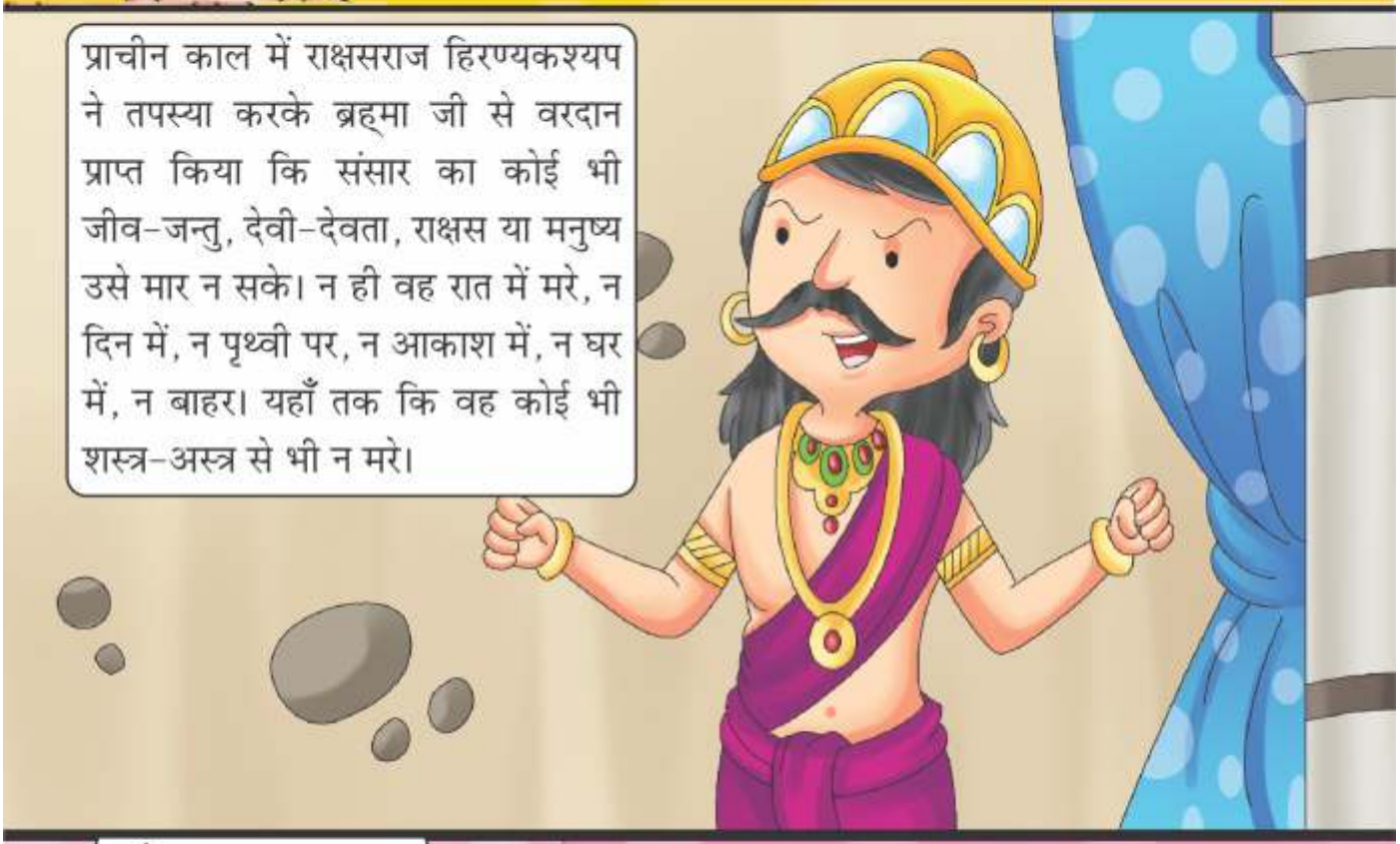

प्रह्लाद भगवान विष्णु का परम-भक्त था और उस पर भगवान विष्णु की विशेष कृपा-दृष्टि थी।
हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को आदेश दिया कि वह उसके अतिरिक्त किसी अन्य की स्तुति न करे।
प्रह्लाद के न मानने पर हिरण्यकश्यप उसे जान से मारने पर उतारू हो गया। उसने प्रह्लाद को मारने के अनेक उपाय किये परन्तु प्रह्लाद प्रभु-कृपा के कारण बचता रहा।

हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को वरदान में एक ऐसी चुनरी मिली हुई थी जिसे ओढ़ने पर होलिका आग में नहीं जल सकती थी।
हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका की सहायता से प्रह्लाद को आग में जलाकर मारने की योजना बनाई।
होलिका बालक प्रह्लाद को गोद में उठाकर उसे जलाकर मारने के उद्देश्य से वरदान से प्राप्त हुई चुनरी खुद ओढ़कर आग में जा बैठी।

प्रभु-कृपा से वह चुनरी वायु के वेग से उड़कर बालक प्रह्लाद पर जा पड़ी और चुनरी हटने पर होलिका जलकर वहीं भस्म हो गई और प्रह्लाद बच गया।
तत्पश्चात् हिरण्यकश्यप को मारने के लिए भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार में खंभे से निकलकर गोधूली समय (शाम और रात के समय का संधिकाल) में दरवाज़े की चौखट पर बैठकर अत्याचारी हिरण्यकश्यप को चीर कर मार डाला।
अत्याचारी राक्षसराज हिरण्यकश्प के मारे जाने पर होली का त्योहार मनाया जाने लगा।

बाल कहानी : विनोद कुमार

होली का अर्थ

जंगल में होली पर खूब धमाल मचा हुआ था। सुबह से ही सभी जानवर एक दूसरे को रंगने में लगे हुए थे। होली के नाम पर कुछ जानवर मनमानी कर रहे थे। गप्पू हाथी ने अपने घर के सामने बड़ा-सा गड्ढ़ा खोद उसमें कीचड़ जमा कर रखा था। आते-जाते सभी जानवरों को वह सूंड से उठा कीचड़ में पटक-पटक कर होली का आनन्द ले रहा था।

जिल्लू जिराफ पक्षियों के घोंसले हवा में उड़ाते हुए 'बुरा न मानो होली है' का उद्घोष कर मजा ले रहा था। इसी तरह ढेंचू गधा आने-जाने वालों पर रंग भरे बैलून से प्रहार कर रहा था। ढोंढू कौआ ने तो जैसे सारे जंगल को काला रंग से रंग देने की कसम खा रखी थी। जंगल में काला खरगोश, काला बगुला नजर आने लगे।

मनमाने ढंग से होली मनाने की खबर जब शेर खां तक पहुँची तो उसने झट से एक बैठक बुलाई।

आरोपी गप्पू, जिल्लू, ढेंचू, ढोंढू सहित समस्त जंगलवासी हाजिर हुए। जब आरोपियों से इस तरह होली मनाने का कारण पूछा गया तो उन लोगों ने इस प्रकार जवाब दिया।

गप्पू हाथी बोला– सभी मेरे लटके हुए सूंड का अपमान करते हैं इसलिए आज मुझे अपने अपमान का बदला लेने का मौका मिला है।

ढेंचू गधा बोला– मेरी तो कोई इज्जत ही नहीं करता। छोटे से छोटा बच्चा भी मुझे पत्थर मारकर भाग जाता है। आज होली में रंगों के गुब्बारे से इन लोगों को पीटने का मौका मिला है।

ढोंढू कौआ बोला– सभी मेरे काले रंग का उपहास उड़ाते हैं। आज मैं भी इन सबको काले रंग से काला कर दूंगा।

जिल्लू जिराफ बोला– मैं तो कह ही रहा हूँ 'बुरा न मानो होली है... ।' सभी की बातें सुन शेर खां ने गम्भीर होकर सभी को समझाया– 'प्यारे मित्रों! होली रंग एवं सौहार्द का पर्व है। होली के नाम पर मनमानी या ऐसी हरकत नहीं होनी चाहिए जिससे दूसरे को तकलीफ हो और दूसरे को तकलीफ देना पर्व नहीं पाप है।

हम एक-दूसरे को रंग व गुलाल इसीलिए लगाते हैं ताकि लाल रंग से हमारे जीवन में लालिमा आए, हरे रंग से हरियाली व उन्नति मिले, केसरिया रंग जीवन को समृद्ध करे, बैंगनी रंग की तरह हमेशा प्रसन्न रहे, पीले वर्ण की तरह कांतिमय सौन्दर्य पाए, आसमान रंग की तरह हमेशा स्फूर्तिवान बने रहें तथा काला रंग हमें बुरी नजरों व दोषों से बचाए।

श्रेष्ठजनों के पैर पर गुलाल रखकर हम आशीर्वाद लेते हैं तथा छोटों के मस्तक पर तिलक लगाकर आशीष देते हैं। साथ ही मित्रों के गालों पर गुलाल लगाकर प्रेम बांटते हैं।'

शेर खां की बातें सभी जानवरों के समझ में आ गई। सभी एक-दूसरे के गालों पर गुलाल लगाकर गले मिलने लगे।

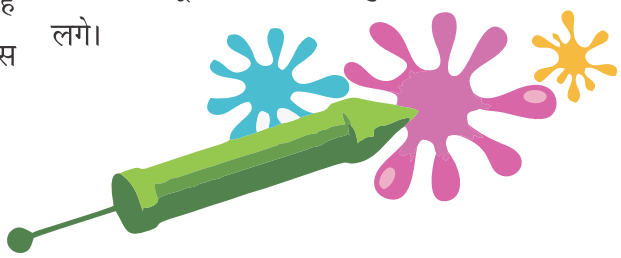

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

प्यारे बच्चे

नन्हे मुन्ने प्यारे बच्चे।
दिल के भोले-भाले बच्चे।
जिधर चलाओ चलते जाते,
हैं ये राज-दुलारे बच्चे।

बच्चे होते मन के सच्चे।
ज्यों मिट्टी के भांडे कच्चे।
ढलकर सुन्दर रूप निखरता,
हैं सबसे ही प्यारे बच्चे।

सभी दिशाओं में प्रभु रहता है।
नहीं कभी सीमाओं में बंधता है।
देख सभी में प्रभु की मूरत,
बच्चे बनते जाते अच्छे।

मात-पिता गुरु का सम्मान।
करके बनना नेक महान।
होगी जग में ऊँची शान,
सबके बनें सहारे बच्चे।

भगत सिंह निर्भीक बड़े

भगत सिंह थे निर्भीक बड़े,
हटे न पीछे रहे अड़े,
आजादी लेना था लक्ष्य,
आजादी के लिए वे लड़े।

मौत से कभी नहीं थे डरे,
ठान लिया जो वो थे करे,
गर्वीले जोशीले थे वीर,
जोश जवानों में भरे।

जाग उठी देखो तरुणाई,
देश पे मिटने की ऋतु आई,
कुर्बानी देने वालों ने,
मातृभूमि की शान बढ़ाई।

क्रांतिवीर जब आगे बढ़ते,
वीर सपूत शिखर पर चढ़ते,
चौड़ी छाती मस्तक ऊँचा,
लक्ष्य प्राप्त ये करके सहते।

बाल कहानी : मीरा सिंह 'मीरा'

गलती का अहसास

घने जंगल में आम का एक पेड़ था। उसकी एक शाखा की कोटर में कौवा रहता था। उसी पेड़ की दूसरी शाखा के कोटर में एक कोयल भी रहती थी। दोनों के व्यवहार में बहुत असमानता थी। इस कारण बातचीत भी नहीं के बराबर होती थी। कौवा स्वभाव से मतलबी व आलसी था। आवाज फटे बांस की तरह कर्कश थी। फिर भी घमंड में चूर रहता था जबकि कोयल स्वभाव से मिलनसार एवं नेकदिल थी। सभी वन्यप्राणी उसकी सुरीली आवाज के कायल थे। वह बहुत परिश्रमी भी थी। एक ही वृक्ष पर एक जैसे दिखने वाले दो पक्षी, एक बिना कुछ परिश्रम किए ऐश की जिन्दगी गुजारने की फिराक में रहता जबकि दूसरी सुबह काम पर निकल जाती आवश्यकतानुसार संगी-साथियों की सहायता करती और शाम होते अपनी कोटर में सकुशल लौट आती।

कौवा दिनभर मटरगश्ती करता। जब कभी भूख लगती तो वह किसी न किसी से कुछ मांग कर खा लेता फिर अपने कोटर में जाकर आराम करने लगता। मौका देखकर कभी-कभी वह कोयल के कोटर से खाना भी चुरा लेता था। कोयल के शुभचिंतक जब कौवे की इस हरकत के बारे में उसे बताते तो वह मुस्कुराकर कहती– कोई बात नहीं। दरअसल वह सोचती 'थोड़ा-सा खाना चुराकर मेरा भाग्य थोड़े चुरा लेगा।'

एक दिन कौवे को अन्य कौवों के साथ गप्पें मारते देख कोयल समझाने की नीयत से बोली– कौवे भाई, कैसे हो? दिनभर गप्पें लड़ाते रहते हो, कभी दाना चुगने क्यों नहीं जाते?

इस पर वह मुँह बिचकाते हुए बोला– ''हूँ... बड़ी आयी सलाह देने वाली? अरे खूब मजे में हूँ। मैं तेरे जैसी दिनभर मजदूरी नहीं करने वाला।''

''लगता है आप बुरा मान गए। मैं तो आपके भले के लिए कह रही थी।''

''अरे तू नन्हीं-सी, पिद्दी-सी जान... ज्यादा इतरा मत। अपनी औकात में रह। मैं अपना भला खुद सोच सकता हूँ। तू अपनी फिक्र कर और चुपचाप यहाँ से चलती बन।''

कोयल उसका तेवर देख चुपचाप वहाँ से उड़ चली। उसके रवैये से उसे तनिक भी हैरानी नहीं हुई क्योंकि वह कौवे के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थी।

एक शाम अचानक तेज आंधी और बारिश आयी। कई विशाल वृक्ष गिर गये पर यह आम का पेड़ अपनी जगह पर डटा रहा। हवा के थपेड़े व पानी की बौछारें इतनी तेज थीं कि कोटर से बाहर निकलना मुश्किल था। सभी वन्यप्राणी जहाँ-तहाँ छिपे हुए थे। दो दिनों पश्चात् हवा की रफ्तार के साथ बारिश भी हुई। कोयल के पास खाने-पीने की कमी

नहीं थी। वह अपनी कोटर से बाहर झांककर बारिश का मजा ले रही थी। इधर कौवे का मुँह उतरा हुआ था। बारिश के कारण दो दिनों से अन्न का एक भी दाना नसीब नहीं हुआ था। अपने कोटर के द्वार पर वह चिंतामग्न बैठा अपने दुर्दिन को कोस रहा था। उस पर नजर पड़ते ही कोयल पूछ बैठी– ''कौवे भाई, बहुत उदास लग रहे हो, सब खैरियत तो है? आओ न बारिश में नहाएं। मौसम की पहली बारिश है। छप-छपा-छप पानी में बहुत मजा आ रहा है।''

इस पर कौवा मायूसी के साथ बोला– ''बहन, तुम ही नहाओ। मेरा मन ठीक नहीं है।''

''क्या बात है भाई? कुछ कहोगे भी...?''

''क्या बताऊँ? सब मेरी गलतियों की सजा है। कोटर में अन्न का एक भी दाना नहीं है। दो दिनों से भूखा हूँ। लगता है भूख के मारे जान ही निकल जाएगी। क्या करूं? कहाँ जाऊँ? कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ। तुमको हमेशा तुच्छ मानता रहा, तुम्हारा मजाक उड़ाया। काश, तुमसे सीख लेता तो आज ये दिन न देखने पड़ते।

''अब क्या करोगे भाई?'' कोयल ने बहुत मासूमियत से पूछा।

''क्या कहूं बहन, यही तो सोच रहा हूँ। बुरे वक्त में कोई साथ नहीं देता। इसके लिए भी मैं ही जिम्मेदार हूँ। तुम्हारे जैसे नेक मित्र के साथ भी मैंने कभी अच्छा बर्ताव नहीं किया।'' कहते-कहते उसकी आँखों से आंसू झरने लगे। उसे आत्मग्लानि हो रही थी। कहने लगा– ''पता है बहन, तुम्हारी अनुपरिस्थिति में कभी-कभी मैं तुम्हारा खाना भी चुराया करता था। उसी आदत के कारण आज मैं भूखा हूँ।'' कौवे को अपनी गलती का अहसास करते देख कोयल का दिल पसीज गया। वह स्नेह से मुस्कुराते हुए बोली– ''भईया, तुम दुःखी मत हो। तुम्हें अपनी गलती का अहसास हुआ, यह बहुत बड़ी बात है। मेरे कोटर में बहुत खाना है। पहले तुम चलकर भरपेट खाना खा लो। बस एक वादा करो...

''क्या बहन, बोलो?''– कौवा बोला।

''यही कि अब तुम जीवन में फिर कभी आलस नहीं करोगे?''– कोयल बोली।

कौवे ने दुबारा कभी आलस नहीं करने का वचन दिया। फिर कोयल के साथ खाना खाकर अपनी भूख मिटायी। कोयल जैसी अच्छी पड़ोसी को पाकर वह खुशी से फूले नहीं समा रहा था।

क्या आप जानते हैं?

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

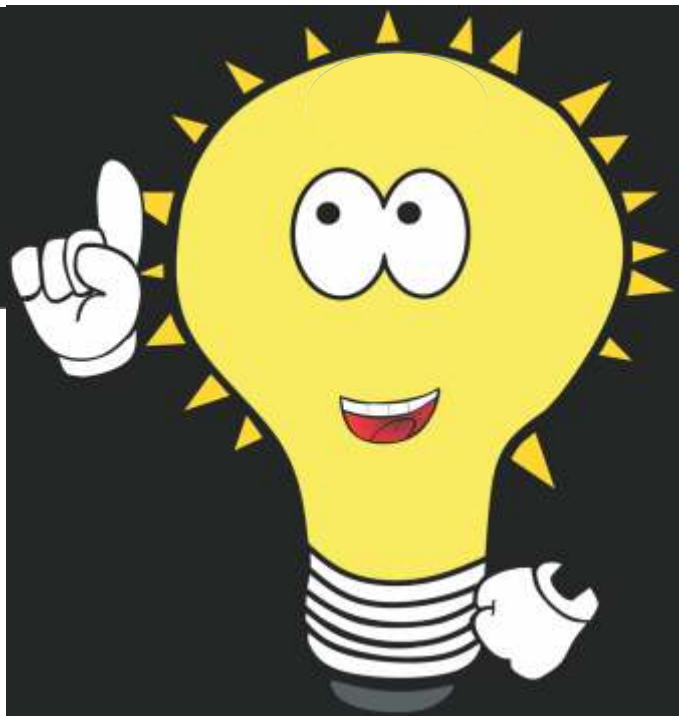

- भारत के प्रथम लोकसभा अध्यक्ष गणेश वासुदेव मावलंकर थे।
- फलों को पकाने के लिए एथिलीन गैस प्रयोग की जाती है।
- इंटरनेट सेवा सन् 1969 में शुरू हुई।
- रविवार की छुट्टी सन् 1843 से आरम्भ हुई थी।
- ब्राजील के जंगलों में खट्टा शहद मिलता है।
- हाथी को प्रत्येक वस्तु दो गुना बड़ी नजर आती है।
- माउंट एवरेस्ट संसार की सबसे ऊँची चोटी है।
- दरियाई घोड़ा एक ऐसा जानवर है जिसके पसीने का रंग गुलाबी होता है।
- सबसे बड़ा ज्वालामुखी पर्वत का नाम है मौना लोआ, क्रेटर।
- सबसे विशाल मूंगा की चट्टान ऑस्ट्रेलिया में 'दि ग्रेट बैरियर रीफ' है।
- खारे पानी की सबसे बड़ी झील अमेरिका में है।
- अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी 'उकाब' है।
- विश्व का सबसे बड़ा बैंक, बैंक ऑफ अमेरिका है।
- 'अमीबा' सबसे छोटा जीवाणु है।
- सबसे अधिक दिनों तक जीने वाला प्राणी कछुआ है जो करीब 300 वर्ष तक जीवित रह सकता है।
- विश्व का सबसे बड़ा द्वीप 'ग्रीनलैंड' में है।
- विश्व का सबसे विशाल बौद्ध मंदिर इंडोनेशिया में स्थित है।
- अर्जुन पुरस्कार की शुरुआत सन् 1961 ई. से हुई है।
- एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने वाली प्रथम महिला भारतीय थी एवं उसका नाम बछेन्द्री पाल था।
- चिड़ियों में शुतुरमुर्ग सबसे बड़ी चिड़िया है।
- विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा अंग्रेजी है।
- कैलिफोर्निया के घने जंगलों में एक ऐसे वृक्षों की जाति है जो सूर्यास्त के बाद प्रकाश देता है। इस वृक्ष से निकला प्रकाश इतना तीव्र होता है कि कोई भी व्यक्ति उस रोशनी से पुस्तक पढ़ सकता है। साथ ही सूर्योदय के साथ ही वह प्रकाश स्वयं लुप्त हो जाता है।
- टिटिहरी एक ऐसा पक्षी है जो कभी भी पेड़ पर नहीं बैठता।
- एक गिलहरी की उम्र 9 साल तक होती है।
- सूअर आसमान की तरफ नहीं देख सकते क्योंकि इनकी आंखें इनके सिर के किनारों पर होती हैं।
- भारत का अंग्रेजी में नाम 'इंडिया' इंडस (सिन्धु) नदी से बना है।
- विश्व की सबसे बड़ी डाक व्यवस्था केवल भारत के ही पास है।

विशेष जानकारी: चन्द्रभान निरंकारी

विदेशों में भी मनाते हैं होली

बच्चों! जानते हो होली को सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में भी मनाया जाता है। परम्परागत ढंग से मनाए जाने के कारण विदेशों में भले ही इन पर्वों का नाम और मनाने का तरीका भिन्न हो, पर यह अवश्य है कि होली की छटा इनमें दृष्टिगोचर होती है।

पोलैंड में होली की भांति प्रतिवर्ष 'आर्सिना' नामक एक पर्व का आयोजन किया जाता है जिसमें पोलैंडवासी एक-दूसरे के ऊपर फूलों द्वारा निर्मित गुलाल डालकर गले मिलते हैं। इस दौरान नृत्य के कार्यक्रम भी सम्पन्न होते हैं।

बर्मा में होली 'तेय्या' नामक त्योहार के रूप में प्रसिद्ध है। इस त्योहार को वे भगवान गौतम बुद्ध के स्वागतार्थ मनाते हैं। उनका विश्वास है कि इस दिन भगवान बुद्ध का अवतरण होता है। लोग एक-दूसरे पर रंग डालकर अपनी खुशी व्यक्त करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका के 'हैलोवीन' की तो बात निराली है। इस पर्व में बच्चे नील नदी के किनारे इकट्ठे होते हैं। भेष बदले हुए लोग एक-दूसरे को हँसाने तथा छकाने की कोशिश करते हैं।

यूनान में 'मेपोल' नामक पर्व आयोजित किया जाता है। चौराहे के बीच एक खम्बा गाड़कर उसके इर्द-गिर्द लकड़ियां इकट्ठी करके जलाई जाती हैं। इस दिन यूनानी देवता 'डायोनाइसस' की आराधना की जाती है।

अफ्रीका में होली को 'ओमना वोंगा' के नाम से पुकारते हैं। इस दिन वोंगा नाम के अत्याचारी राजा के पुतले को जलाया जाता है। लागे वोंगा के पुतले को जलाते समय हर्ष का अनुभव करते हैं।

पेरू के निवासियों द्वारा दिसम्बर में भारतीय होली जैसा ही एक त्योहार का आयोजन किया जाता है जो कि फसल के पकने व काटने की खुशी में मनाया जाता है। पर्व वाले दिन यहाँ के नर-नारी एक निश्चित जगह पर एकत्रित होते हैं तथा संकेत होते ही किसी निकटवर्ती पहाड़ी की ओर दौड़ते हैं। यह निराली प्रथा निरंतर दिन तथा रात चलती है।

इटली में मार्च माह के अंतिम सप्ताह में 'रेडिका' त्योहार मनाया जाता है। लोग लकड़ियां एकत्रित करके जलाते हैं। फिर उसमें नई फसल के बीज फेंकते हैं। इस मान्यता के साथ कि उनके ऐसा करने से अन्न की देवी फ्लोरा प्रसन्न हो जायेगी तथा अच्छी फसल होगी।

फ्रांस में प्रतिवर्ष 19 मार्च को होली की भांति एक त्योहार मनाया जाता है। इस दिन सब लोग एक स्थान पर इकट्ठे होकर किन्हीं दो व्यक्तियों का चुनाव कर उन्हें राजा 'पीते' तथा रानी 'पीती' की उपाधियों से अलंकृत किया जाता है। जो व्यक्ति इस उत्सव में हिस्सा नहीं लेता, उसे तरह-तरह से परेशान किया जाता है। इस दिन लोग रात को अपने पुराने जूते जला देते हैं तथा मिठाई खाते हैं।

चीन में 'च्वेजे' को बसन्तोत्सव का प्रतीक मानकर 15 दिनों तक मनाया जाता है। इसी तरह **चेकोस्लोवाकिया** में 'बोलिया', **थाइलैंड** में 'सांगक्रान' तथा मलाया, जावा, सुमात्रा, मिश्र और स्वीडन में भी कुछ ऐसे ही पर्व मनाये जाते हैं जो भारतीय होली के ही प्रतिरूप हैं।

बालकथा : महेन्द्र सिंह शेखावत

रंग में भंग

होली का दिन था। रवि की माँ उसे बार-बार समझा रही थी– देखो बेटा, होली पर थोड़ा-सा गुलाल लगाकर ही होली खेलनी चाहिए और एक-दूसरे को बधाई एवं शुभ-कामनाएं देनी चाहिएं।

लेकिन रवि कहाँ मानने वाला था। वह तो अपनी बोतल में रंग भरकर घर से रवाना हो गया, होली खेलने।

रवि को देखकर अंकित भी अपनी बोतल भर लाया। अब दोनों एक-दूसरे पर रंग डालने लगे।

रवि और अंकित को होली खेलते देखकर कमल भी पास पड़ा कीचड़ उठा-उठाकर उन पर फेंकने लगा।

तभी रवि और अंकित की बोतल आपस में टकरा गई और अगले ही पल रवि के हाथ से खून की धारा बह निकली।

अंकित की आँखों में कीचड़ जा गिरा था।

जब दोनों रोते-रोते अपने घर गये तो उनके मम्मी-पापा तुरन्त उन्हें अस्पताल लेकर गये और उनका उपचार करवाया।

यदि वे पहले ही अपनी मम्मी-पापा की बात मान लेते तो उन्हें यह पीड़ा नहीं झेलनी पड़ती।

इसके बाद तो दोनों ने दृढ़-निश्चय कर लिया कि वे भविष्य में इस प्रकार से होली कभी नहीं खेलेंगे।

इन बातों का रखें ध्यान और मनाएं सुरक्षित होली

★ बेहतर होगा प्राकृतिक रंगों यानी 'नेचुरल कलर्स' का इस्तेमाल करें।

★ पूरी बांह यानी 'फुल स्लीव्स' के कपड़े पहनें।

★ रंगों में भीगने से पहले शरीर पर तेल लगाएं। ऐसा ही बालों के लिए भी करें। बेहतर होगा कि नारियल तेल का इस्तेमाल किया जाए। इससे रंग आपकी त्वचा को नुकसान नहीं पहुँचा पाएंगे।

★ 'एक्सट्रीम डार्क कलर्स' यानी बहुत गहरे रंगों के इस्तेमाल से बचने की कोशिश करें। ये रंग न खुद खरीदें और न ही दूसरों को ये रंग खरीदने की सलाह दें।

★ कोशिश ये करें कि कोई भी रंग मुँह, नाक या फिर आंख में न जाए।

★ बच्चों का विशेष ध्यान रखें। अगर वे रंग खेल रहे हैं तो बड़े जरूर करीब हों और नजर रखें।

★ होली खेलने के बाद या खेल के दौरान अगर त्वचा में जलन हो, आंखों में धुंधलापन या खुजली हो या फिर सांस लेने में दिक्कत हो तो डॉक्टर से सलाह लें।

★ बहुत देर तक पानी में न रहें। बच्चों का ध्यान इस मामले में ज्यादा रखें।

★ कान में भी पानी न जाने दें। केमिकल वाले रंगों का पानी आपके कान को भी नुकसान पहुँचा सकता है।

★ होली खुशियों का त्योहार है। इसलिए इसे सुरक्षित तरीके से मनाएं।

–स्रोत : वेब दुनिया

विज्ञान लेख : किरण बाला

अब पेड़ पर भी पैदा होगी बिजली ...

पेड़ पौधों से हमें शुद्ध वायु के अतिरिक्त फल–फूल भी प्राप्त होते हैं, लेकिन अब आपको जानकर अचरज होगा इन्हीं पेड़–पौधों से बिजली भी मिलेगी।

हाँ, अब वो दिन दूर नहीं जब बिजली पेड़ों पर पैदा की जाएगी। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए फिलहाल फ्रांसीसी इंजीनियरों ने एक कृत्रिम पेड़ विकसित किया है। यह पेड़ हवा के उपयोग से बिजली पैदा करता है।

इस 'विंड ट्री' को फ्रांसीसी वैज्ञानिकों की टीम ने तैयार किया है। इस संदर्भ में वैज्ञानिकों का कथन है– इस पेड़ को बनाने का ख्याल मस्तिष्क में तब आया, जब उन्होंने हवा न चलने के बावजूद पत्तियों को हिलते देखा।

दरअसल इस पेड़ की पत्तियों में इस तरह के छोटे–छोटे ब्लेड लगाए गए हैं, जो हवाओं को अंदर की तरफ मोड़ते हैं। यानी यह 'विंड ट्री' हवा के बहाव से बिजली पैदा करता है।

वैज्ञानिकों की टीम ने तीन साल के शोध के उपरांत 26 फीट ऊँचा प्रोटो टाइप पेड़ विकसित किया है। इसे उत्तर–पश्चिम फ्रांस के ब्रिटनी शहर के 'प्लूमर बोदोयू कम्यून' में लगाया गया है।

यह पेड़ एक पारम्परिक 'विंड टरबाइन' से ज्यादा बिजली पैदा कर सकता है। क्योंकि यह सिर्फ 4.5 मील प्रति घंटे की रफ्तार वाली हवाओं से भी बिजली पैदा कर सकता है।

वैज्ञानिकों का एक कथन यह भी है– पहाड़ी क्षेत्रों में उगे ऊँचे–ऊँचे पेड़ों के पत्तों में आसमानी तड़ित की चमक समा जाती है, जो कई घंटों तक रहती है। कुदरत की इस चमक को हासिल करने के लिए वैज्ञानिक विशेष किस्म के उपकरण बनाने में जुटे हुए हैं।

विश्व के कई घने जंगलों में ऐसे पेड़ भी मौजूद हैं, जो रात्रि में अपने पत्तों से प्रकाश की किरणें उत्पन्न करते हैं। आखिर इनमें प्रकाश की किरणें पैदा करने की शक्ति कहाँ से आती है? यह एक रहस्य का विषय है। वैज्ञानिक इन पेड़ों की सूक्ष्म जांच पड़ताल कर रहे हैं, ताकि कम खर्च में अधिक से अधिक बिजली पैदा की जा सके।

बाल कहानी : मुमताज हसन

शरारत छुट गई

ब्रजेश एक नटखट लड़का था। वह हर समय शरारत करता रहता था। उसकी शरारत से घर के सारे लोग परेशान रहने लगे थे। उन्हें प्रतिदिन मोहल्ले से ब्रजेश की शरारतों की ढेर सारी शिकायतें मिलती थीं। कभी वह रामू के कुत्ते को पत्थर मार देता था तो कभी रामू चाचा की बकरियां दूर खेत में भगा देता। कभी किसी के बाग में घुसकर अमरूद चुरा लेता था। उसकी शरारतों से मोहल्ले के सारे लोग परेशान हो चुके थे। कई बार उसे चेताया गया, मार भी पड़ी परन्तु वह नटखट तो सुधरता ही नहीं था।

एक दिन की बात है। ब्रजेश स्कूल से वापस घर लौट रहा था। तभी उसे कुछ दूरी पर स्थित बगीचे में आम के वृक्ष दिखे, गर्मी का मौसम होने के कारण उस पर ढेर सारे आम लगे हुए थे। आम देखकर उसके मुँह में पानी भर आया। वह आम तोड़ने का उपाय सोचने लगा। कुछ देर वहाँ खड़ा रहकर आमों को वह निहारता रहा, फिर कुछ सोचकर घर आ गया।

रविवार का दिन था। ब्रजेश आम तोड़ने की योजना बनाकर, अपने कुछ अन्य उदण्ड मित्रों को साथ लेकर आम के बगीचे में जा पहुँचा। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। उस समय वहाँ कोई नहीं था। बस फिर क्या था? मित्रों को आसपास खड़ा कर वह फुर्ती से पेड़ पर चढ़ने लगा। एकाएक वह आधा वृक्ष पर से नीचे उतर आया।

'क्या हुआ ब्रजेश, क्यों उतरने लगे?' मित्रों ने जानना चाहा तो वह घबराकर बोला– 'वह ... वह देखो, ऊपर 'भूण्ड' (जहरीली मक्खियां) का छत्ता है।'

सबने देखा; वृक्ष की एक शाखा पर एक बड़ा-सा 'भूण्ड मक्खियों' का छत्ता था। उस पर हजारों जहरीली मक्खियां भिनभिना रही थीं।

'ब्रजेश चलो हम एक डण्डा ले आते हैं। उसी से आम तोड़ेंगे।' रवि कह रहा था कि सुमित ने उसकी बात काटी, 'नहीं ... नहीं, डंडे-वंडे से काम नहीं चलेगा। अभी देखना मेरी बहादुरी। मैं पेड़ पर चढ़ जाऊंगा।' सुमित ने कहा और वह सरपट पेड़ पर चढ़ने लगा।

तभी ब्रजेश को एक शरारत सूझी। उसने एक पत्थर उठाकर छत्ते पर दे मारा। मक्खियां बिफर उठीं। सारे लड़के चीखते-चिल्लाते भागे। सुमित भी उसे गालियां देता हुआ पेड़ पर से कूदकर भाग गया। लेकिन भागते वक्त ठोकर लगने से ब्रजेश गिर पड़ा तथा मक्खियां उस पर टूट पड़ीं। वह लहुलुहान होकर

वहीं बेहोश हो गया। शरीर फूलकर कुप्पा हो गया। कहीं-कहीं से खून का रिसाव भी होने लगा था।

इधर उसके मित्रों ने घर में कोई खबर न दी। जब बहुत देर हुई और वह घर नहीं पहुँचा तो मम्मी-पापा को चिन्ता सताने लगी। पिता उसे ढूंढ़ने निकले, मित्रों से पूछा तो सबने यही बताया– आज तो वह अकेले ही कहीं जा रहा था। हमारे साथ नहीं गया। पिता की चिन्ता दोगुनी हो गई। न जाने किस स्थिति में होगा वह। वे उसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते बाजार की तरफ निकल गये। थोड़ी दूर पर जाने के पश्चात् उन्होंने देखा कि डॉ. शर्मा की क्लीनिक में भीड़ लगी है। उसने वहाँ जाकर पूछा कि भीड़ क्यों लगी है तो एक व्यक्ति ने बताया कि एक लड़के को 'भूण्ड' (जहरीली मक्खियों) ने डंक मार दिये हैं। वह बेहोश है।

ब्रजेश के पिता ने सोचा, 'कहीं वह ब्रजेश तो नहीं...' और वे विचलित हो गये। जब वे अन्दर दाखिल हुए तो उनकी आशंका सही निकली। बेड पर वही था, उसका सारा शरीर फूला हुआ था। डॉ. शर्मा उसका इलाज कर रहे थे। पास ही सुरेश बैठे थे जो ब्रजेश के पापा के मित्र हैं। उसने ब्रजेश के पापा को सारी घटना से अवगत कराते हुए बताया– 'यदि मैं आज इसे यहाँ नहीं लाता तो शायद परेशानी बढ़ सकती थी।' ब्रजेश के पापा सुनकर अवाक् रह गये। थोड़ी देर बाद उसने आंखें खोल दीं। पापा ने डॉ. शर्मा की फीस आदि चुकाकर घर ले आये।

सारी बातें मम्मी को बताईं। यदि सुरेश इसे लेकर डॉक्टर के पास नहीं ले जाता तो शायद यह बच नहीं पाता। मम्मी ने उनके प्रति आभार प्रकट किया। ब्रजेश की आंखें भर आईं। वह सुबकते हुए क्षमायाचना करने लगा, 'मुझे माफ कर दो, माँ, अब मैं कभी ऐसा काम नहीं करूंगा। आज मुझे अपने किये की सजा मिल गयी है और वह फिर सुबकने लगा।

मम्मी ने उसे समझाया, 'बेटे, अच्छे बच्चे कोई भी गलत काम नहीं करते, चोरी करना पाप है।'

ब्रजेश ने आगे से शरारती बच्चों का संग न करने तथा शरारत और चोरी जैसा कोई भी काम न करने की कसम खाई।

कुछ समय बाद वह स्वस्थ हो गया और पढ़ाई में मन लगाने लगा। अब उसके स्वभाव में परिवर्तन आ गया था। मम्मी-पापा प्रसन्न थे।

पक्षी जगत (आलेख) : परशुराम शुक्ल

पानी का कौआ : जलकाग

कौए से तो हम सभी परिचित हैं। यह एक धूर्त पक्षी है। नगर तथा गाँव की बस्तियों में घरों की छतों एवं खुले आंगन आदि में अक्सर देखा जा सकता है। कभी-कभी तो यह घर के अन्दर घुस आता है और खाने-पीने की चीजें लेकर उड़ जाता है।

जलकाग की अनेक विशेषताएं तथा गुण सामान्य कौए के समान ही होते हैं। दोनों का रंग तथा आकार एक जैसा होता है एवं दोनों ही एक जैसा घोंसला बनाते हैं किन्तु दोनों पक्षियों में जमीन-आसमान का अन्तर है।

जलकाग जलीय पक्षी है। इसे पनकौआ भी कहते हैं। इसका आकार जंगली कौए के बराबर होता है। जलकाग के शरीर का रंग भी कौए के समान काला होता है किन्तु इसकी चोंच पतली और नुकीली होती है तथा चोंच का अगला भाग नीचे की ओर मुड़ा हुआ होता है। जलकाग की गर्दन पर सफेद रंग का एक धब्बा होता है एवं सिर पर बहुत छोटी-सी कलगी होती है। इसकी दुम काले पंखों की और लम्बी होती है जिससे यह सरलता से पानी में तैर सकता है।

जलकाग भारत के अधिकांश भागों में पाया जाता है। इसे झीलों, तालाबों तथा किसी प्रकार के पानी वाले भागों में अकेले या झुंड के साथ अक्सर देखा जा सकता है।

जलकाग का प्रमुख भोजन मछली है। यह एक कुशल तैराक होने के साथ ही साथ अत्यन्त कुशल गोताखोर भी है। अतः इसे मछलियों का शिकार करने में कोई तकलीफ नहीं होती है। यह मछलियों का शिकार अकेले भी करता है और पेलिकन के समान झुंड बनाकर भी। जलकाग शिकार करने के बाद पानी के पास ही किसी ऊँची चट्टान पर बैठ जाता है और बड़े आराम से अपने पंख सुखाता है।

जलकाग का प्रजननकाल उत्तर भारत और दक्षिण भारत में अलग-अलग है। उत्तर भारत के जलकाग का प्रजननकाल जुलाई से सितम्बर तक होता है जबकि दक्षिण भारत के जलकागों का प्रजननकाल नवम्बर से फरवरी तक। प्रजनन के पूर्व जलकाग सामान्य घरेलू कौए के समान किसी वृक्ष पर घास-फूस, तिनकों, पंखों तथा विभिन्न प्रकार के रेशों की सहायता से कटोरे के आकार का घोंसला बनाता है। इसका घोंसला भीतर से काफी मुलायम और गद्देदार तथा मजबूत होता है। इसी घोंसले में मादा जलकाग चार या पांच अंडे देती है। इसके अंडों का रंग हल्का हरा-पीलापन लिये हुए खड़िया के समान होता है। नर तथा मादा जलकाग अंडों और बच्चों की देखभाल करते हैं तथा सामूहिक रूप से उनका पोषण करते हैं।

नहीं खेलूंगी ऐसी होली

बाल कहानी : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

वैसे तो उसका नाम सरिता था लेकिन सब लोग उसे प्यार से पप्पे कहकर बुलाते थे। बड़ी प्यारी थी पप्पे! नन्हीं-सी गोल-मटोल गुड़िया जैसी। जब वह आंखें मटकाकर बातें करती थी तो सभी के होठों पर अनायास ही मुस्कान फैल जाती थी। पप्पे हमेशा हँसती, खिलखिलाती रहती थी। दादा-दादी के लिए तो वह किसी खिलौने से कम नहीं थी।

लेकिन पप्पे पिछले कई दिनों से उदास थी। न जाने उसकी हँसी कहाँ गायब हो गयी थी? दादा-दादी सहित घर के सभी सदस्य उसे मनाते-मनाते हार गए थे लेकिन पप्पे के होठों पर हँसी के फूल नहीं खिल सके।

बात दरअसल यह थी कि उस दिन जब पप्पे स्कूल गयी तो उसकी सहेली बिट्टी ने उससे बातों ही बातों में कहा था कि इस बार वह होली पर खूब सारे गुब्बारे लेकर आएगी। फिर उनमें रंग भरकर ऊपर छत पर रख लेगी। होली वाले दिन उसके घर के पास से जो भी निकलेगा, उसके वह छत पर से ही रंग भरे गुब्बारे फेंककर मारेगी। इस प्रकार वह सबको तो गुब्बारों के सहारे ऊपर से नीचे तक रंग डालेगी लेकिन उसे कोई नहीं रंग पाएगा। बस, यही बात पप्पे के दिमाग में बैठ गयी थी।

छुट्टी होने पर जब वह घर आयी तो उसने मम्मी से कहा कि इस बार वह भी होली पर गुब्बारे खरीदेगी। फिर उनमें रंग भरकर छत पर से सबको फेंककर मारेगी। उसकी बात सुनकर मम्मी ने उसे समझाया था– 'बेटी, रंग भरे गुब्बारे बहुत खतरनाक होते हैं। इनसे किसी को बहुत चोट लग सकती है। होली तो स्नेह और अपनेपन का त्योहार है। किसी के चोट लगने के कारण रंग में भंग हो जाए, यह ठीक नहीं है। मैं तुम्हारे लिए इस बार बहुत अच्छी पिचकारी लाऊंगी। उससे रंग खेलना।' लेकिन पप्पे ने तो गुब्बारे लेने की रट ही लगा दी थी। सबके समझाने पर भी उसने किसी की बात नहीं मानी। बस अपने गाल फुलाकर बैठ गई थी।

कल होली थी। गली की नुक्कड़ पर होलिका सजायी गयी थी। चारों ओर रंग-बिरंगी झंडियों की झालरें बनाकर बांधी गयी थीं। आज शाम को जब पापा जी दफ्तर से घर आए तो पप्पे ने देखा कि उनकी दायीं आंख पर पट्टी बंधी है।

'यह क्या हुआ पापा जी?' पप्पे ने घबराते हुए उनसे पूछा।

'कुछ नहीं बेटी, सुबह दफ्तर जाते समय रास्ते में एक बच्चे ने रंग भरा गुब्बारा फेंककर मारा था। वह गुब्बारा सीधा मेरी आंख में आकर लगा था। वो तो भगवान का धन्यवाद कहो कि मैं स्कूटर धीरे-धीरे चला रहा था। वरना आज न जाने कितनी बड़ी दुर्घटना हो जाती। ढेर सारा रंग मेरी आंख में घुस गया था। मैं तुरन्त डॉक्टर के पास गया। उन्होंने आंख की जांच करके बताया कि आंख में काफी गहरी चोट आयी है। हो सकता है कि आंख की रोशनी भी चली जाए।' पापा उदासी भरे स्वर में बोले।

पापा की बात सुनकर पप्पे को बहुत आश्चर्य हुआ। रंग भरे गुब्बारों से इतनी भयंकर चोट भी लग सकती है। यह तो उसने सोचा ही नहीं था। उसे अब मम्मी की कही हुई बातों में सच्चाई नजर आने लगी थी

जो उन्होंने उस दिन उससे कही थीं। जब उसने गुब्बारे लेने की ज़िद की थी। उसने मन की मन सोचा कि अब वह गुब्बारे लेने की ज़िद नहीं करेगी।

अभी वह यह सब सोच ही रही थी कि पापा जी ने उसे आवाज दी। वह धीरे-धीरे पापा जी के पास जाकर चुपचाप खड़ी हो गई। उसे देखकर पापा ने कहा– 'बेटी, तुम इसीलिए उदास हो न कि उस दिन मम्मी ने तुम्हें गुब्बारे खरीदकर देने से मना कर दिया था? देखो, मैं तुम्हारे लिए गुब्बारे लेकर आया हूँ। अब तो खुश है न मेरी गुड़िया?'

पापा जी, मुझे गुब्बारे नहीं चाहिए। मुझे माफ कर दो पापा जी! मुझे नहीं पता था कि गुब्बारों से इतनी चोट लग सकती है। यदि मैं भी रंग भरकर किसी को गुब्बारा मारूंगी तो उसे भी आपकी तरह चोट लगेगी। मैं किसी के चोट मारना नहीं चाहती पापा जी...।' कहते-कहते वह फफक कर रो पड़ी।

उसे रोते देखकर पापा जी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– 'बेटी, यह तो बड़ी खुशी की बात है कि तुम्हें इस बात का अहसास हो गया कि रंग भरे गुब्बारों से किसी को भी गम्भीर चोट लग सकती है। हो सकता है कि तुम्हारे पापा जी की तरह उसकी भी आंख की रोशनी चली जाने का खतरा हो, जिसको तुम गुब्बारे मारो।'

कुछ क्षण रूक कर उन्होंने उसकी ओर देखते हुए कहा– 'लेकिन अब तो मैं गुब्बारे ले आया हूँ। इसका क्या करोगी?'

'इन गुब्बारों में हवा भरकर सारे घर में सजा दूंगी पापा जी। जब बहुत सारे लोग होली मिलने आएंगे तो सजा हुआ घर सबको बहुत अच्छा लगेगा।'– पप्पे धीरे से मुस्कुराकर बोली। लेकिन अगले ही क्षण उसके चेहरे पर फिर से उदासी छा गयी। उदासी भरे स्वर में वह बोली– 'आपकी आंख कितने दिन में ठीक हो जाएगी पापा जी?'

'अच्छा तुम यह बताओ पप्पे कि तुम अपने पापा जी की आंखें कितने दिन में ठीक देखना चाहती हो?' पापा जी ने मुस्कुराते हुए पूछा।

'मैं तो चाहती हूँ कि मेरे पापा जी की आंख अभी और इसी वक्त ठीक हो जाए।'– पप्पे खुशी से उछलती हुई बोली।

'अच्छा तो फिर लो, तुम्हारे पापा जी की आंख ठीक हो गयी।'– यह कहकर उन्होंने अपनी आंख पर बंधी पट्टी खोल दी।

पप्पे को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि पापा जी की आंख बिल्कुल ठीक है। उसमें कोई चोट नहीं लगी है। इसका मतलब कि पापा जी ने उससे झूठ बोला था। अभी वह कुछ कहती इससे पहले ही दादा जी अपना चश्मा ठीक करते हुए कमरे में पधारे और धीरे से मुस्कुराते हुए बोले– 'पप्पे बिटिया, तुम्हारे पापा जी ने तुम्हें समझाने के लिए यह नाटक किया था ताकि तुम्हें यह अहसास हो कि वास्तव में रंग भरे गुब्बारों से कितनी चोट लग सकती है, हमें खुशी है कि तुम्हारी समझ में यह बात भली-भांति आ गयी है।'

'हाँ दादा जी, मैं समझ गयी हूँ कि रंग भरे गुब्बारों से बहुत चोट लग सकती है। इसलिए अब न तो मैं कभी रंग भरे गुब्बारे लेने की ज़िद करूंगी और यदि मुझे कोई भी ऐसा करता हुआ दिखेगा तो उसे भी मना करूंगी।' पप्पे मुस्कुराती हुई बोली।

'वाह बेटी, यह हुई न बात! तो इसी बात पर हो जाए एक जोरदार ठहाका! दादा जी तेजी से ठहाका मारकर हँसते हुए बोले। उनके साथ पप्पे और पापा जी भी जोर से ठहाका मारकर हँस पड़े।

प्रस्तुति : डॉ. सुरेश उजाला

बाल मुक्तक

दीप जलाओ दीप जलाओ।
ज्ञान की गंगा धरा पे लाओ।
अंतरमन का मिटे अंधेरा,
अपने दीप स्वयं बन जाओ।

पढ़-लिख कर तुम ज्ञान बढ़ाओ।
जग में तुम विद्वान कहाओ।
विकसित करो बचपन अपना,
दुनिया में इतिहास बनाओ।

सच्ची पुस्तक अच्छा ज्ञान।
हासिल करके बनो महान।
पढ़-लिखकर जब बड़े बनोगे,
होगा दुनिया का उत्थान।

बाल गीत : हरप्रसाद रोशन

बाग

बाग घूमकर बन्दर आया,
काले-काले जामुन लाया।

झूमता हुआ हाथी आया,
सेब, संतरे, केले लाया।

टपटप करता घोड़ा आया,
मीठे रसीले आम लाया।

सबके बाद में हिरन आया,
तरबूज और अनार लाया।

सभी फलों का ढेर लगाया,
मिल-जुलकर फिर सबने खाया।

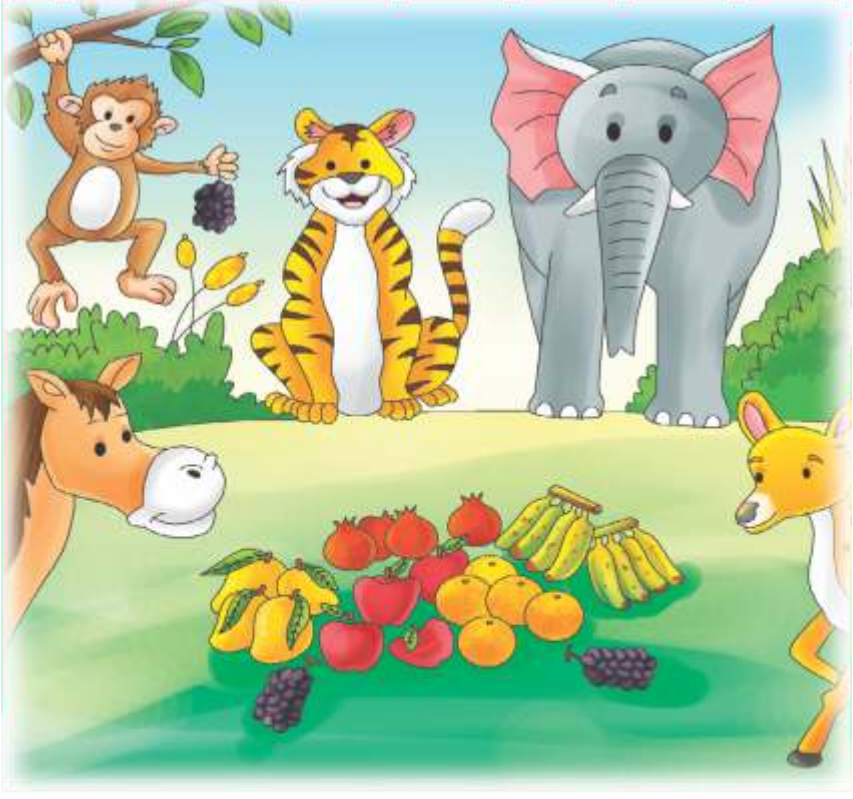

प्रस्तुति : विद्या प्रकाश

वैज्ञानिक जानकारी

अंडा उबलने पर ठोस क्यों हो जाता है?

- कच्चा अंडा तोड़ने पर जो तरल पदार्थ दिखलायी पड़ता है वह उबलने पर ठोस हो जाता है। इसका कारण यह है कि अंडे के भीतरी भाग में एक विशेष प्रकार का प्रोटीन होता है जो सामान्य तापमान में तरल रहता है तथा गर्म करने पर रासायनिक क्रिया होने पर यह विखंडित होकर ठोस रूप में बन जाता है। वैसे अंडे का प्रोटीन तरल होने पर भी पानी में नहीं घुलता। अंडे के पीले भाग (जर्दी) में वसा अधिक होता है।

बर्फ का टुकड़ा पानी में क्यों तैरता है?

- वैसे देखने में बर्फ का टुकड़ा ठोस होता है फिर भी वह पानी पर तैरता रहता है। इसका कारण यह होता है कि जिस पानी से बर्फ बनती है उस पानी का आयतन अधिक होता है तथा बर्फ बनने के बाद उसका घनत्व कम हो जाता है। घनत्व कम होने के कारण बर्फ का टुकड़ा पानी पर तैरता है।

नाखून काटने पर दर्द क्यों नहीं होता?

- नाखून मानव शरीर में मृत कोशिकाओं से बने होते हैं। नाखून में रुधिर की कोशिकाएं नहीं पायी जातीं। इसलिए जब हम ब्लेड या 'नेल-कटर' से नाखून काटते हैं तो हमें दर्द का अनुभव नहीं होता।

दूध कब दही बन जाता है?

- दूध के जमने और फटने की क्रियाएं वास्तव में बैक्टीरिया के कारण होती है। ये आकार में इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें हम नंगी आँखों से नहीं देख पाते हैं। ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि एक सुई की नोक पर हजारों की संख्या में जीवाणु हो सकते हैं। दूध में यदि लैक्टोवैसीलियस या स्टेफैलोकोकस नामक जीवाणु मिल जाएं, जो दही में मौजूद होते हैं तो वह अपनी संख्या में बढ़ोत्तरी करना आरम्भ कर देते हैं और सारे दूध को दही में बदल देते हैं।

'कार्क' पानी में क्यों नहीं डूबता है?

- जब हम कार्क के टुकड़े को पानी में डालते हैं तो देखते हैं कि वह डूबने के बजाय हमेशा ऊपर तैरता रहता है। यही कारण है कि प्राचीन समय में इसके बड़े-बड़े टुकड़ों से डूबते हुए मनुष्य को बचाने में प्रयोग करते थे। वास्तव में कार्क का पानी में तैरने का प्रमुख कारण यही है कि यह पानी से हल्का होता है। कार्क हमें 'कार्क ओक' नामक वृक्ष की छाल से प्राप्त होता है। कार्क की कोशिकाएं आपस में सघन न होते हुए दूर-दूर होती हैं लेकिन पानी कोशिकाओं की दीवारों में आसानी से नहीं भर पाता क्योंकि वहाँ हवा भरी होती है यही कारण है कि पानी में डूबने से यह हमें बचाती हैं। आज सबसे ज्यादा कार्क साउंड फ्रूफ कमरों में इस्तेमाल किया जाता है इसके अलावा फ्रीजर, रेफ्रिजरेटरों और सभागारों में भी इसका उपयोग होता है।

बाल कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

भालू

इस धरती पर सात तरह के,
रोचक भालू पाये जाते।
काले भूरे श्वेत रंग से,
बालों वाली त्वचा सजाते।।

कोडियाक रॉकी पर्वत का,
बड़ा साहसी रूप दिखाता,
बच्चों इसके एक वार से,
वन का भैंसा तक मर जाता।

दिन में किसी गुफा के भीतर,
बड़ी शान से लोट लगाता।
और रात में बाहर आकर,
कंद-मूल फल गन्ने खाता।

छत्ता तोड़ शहद पीकर भी,
बालों के कारण बच जाता।
और कभी चढ़ वृक्ष पर,
ताड़ी पीकर धूम मचाता।

भारी भरकम होने पर भी,
बड़ी तेज यह दौड़ लगाता।
और कलन्दर के कहने पर,
नये-नये करतब दिखलाता।

बाल कविता : दिनेश विजयवर्गीय

ऊँट

'रेगिस्तान का जहाज' कहलाता,
मरु की शान कहलाता ऊँट।

मरु उत्सव में तरह-तरह के,
करतब बहुत दिखाता ऊँट।

अपनी लम्बी टांगों से,
सरपट दौड़ लगाता ऊँट।

कई दिनों तक बिन पानी के,
जीवन अपना जी जाता ऊँट।

अपने कई गुणों के खातिर,
सम्मान सभी का पाता ऊँट।

जिराफ : संसार का सबसे ऊँचा प्राणी

अफ्रीका के रेगिस्तानी क्षेत्रों में तेज दौड़ने वाला, ऊँट जैसा स्तनधारी विचित्र पशु पाया जाता है। इस पशु का नाम है– जिराफ। कद में यह हाथी से करीब दो गुना और मनुष्य से करीब तीन गुना ऊँचा होता है। आमतौर पर इसकी ऊँचाई साढ़े पांच से छः मीटर तक रहती है। नर जिराफ की ऊँचाई मादा जिराफ से थोड़ी अधिक रहती है।

जिराफ धरती का सबसे ऊँचा प्राणी है। इसकी इस ऊँचाई का कारण इसकी लम्बी ग्रीवा है। ऊँट की गर्दन की भांति जिराफ की गर्दन भी भोजन की खोज में लम्बी हो गई है। दोनों ही जन्तु एक वंश के माने जाते हैं।

जिराफ के मुँह की बनावट ऊँट के मुँह से मिलती-जुलती है। नोकदार थूथन और लम्बी पतली जीभ से उसे पेड़ों की पत्तियां नोचने में सुविधा होती है। सिर पर दो सींगनुमा अंग जिराफ की एक अन्य विशेषता है। ये सींग खाल से मढ़े होते हैं और सिर की हड्डी से इनका कोई संबंध नहीं होता। इनके सिरों पर बालों का एक-एक गुच्छा होता है। इन सींगों की जिराफ के लिए प्रत्यक्षतः कोई उपयोगिता नहीं है। अपनी रक्षा के लिए भी वह इनका उपयोग नहीं करता है।

जिराफ खुर वाला चौपाया है। इसके शरीर का रंग हल्का-भूरा पीलेपन की मिलावट लिए होता है। उस पर चीते की खाल की तरह गहरे या बादामी या मटमैले रंग की गोल या लम्बी चित्तियां होती हैं, जिनसे यह खूबसूरत लगता है। इन चित्तियों की वजह से वह आमतौर पर शिकारियों और शेर जैसे जानवरों से सुरक्षित रहता है।

जिराफ का हर अंग विचित्र होता है। इसका शरीर छोटा, पर टांगे और गर्दन काफी लम्बी होती है। जिराफ का शरीर आगे से पीछे की तरफ ढालू रहता है, अगला हिस्सा काफी ऊँचा और पिछला हिस्सा नीचे रहने के कारण अगली टांगों से पिछली टांगें कुछ छोटी मालूम होती हैं। हालांकि इसकी चारों टांगें बराबर होती हैं। इसकी गर्दन ऊँट की तरह लम्बी होती है। उस पर काफी दूर तक बाल रहते हैं।

संकट की स्थिति में जिराफ शक्तिशाली टांगों से ही अपनी रक्षा करता है। शेर जैसे हिंसक जानवर भी जिराफ की टांगों की मार से दूर रहने में ही अपनी कुशल समझते हैं। केवल असुविधा की जगह में ही फंसा कर शेर उसे मार पाता है।

जिराफ का सिर छोटा, थूथन लम्बा और नुकीला-सा होता है। इसकी आँखें छोटी पर देखने में खूबसूरत होती हैं। इसकी नजर काफी तेज होती है। यह अपने नथूने जब चाहे खोल या बंद कर सकता है, इन्हीं विशेषताओं से यह रेतीले तूफान में अपनी नाक बंद कर लेता है, जिससे उड़ती हुई रेत से अपना बचाव कर पाने में यह समर्थ होता है। इसके कान नुकीले होते हैं। इसकी पूंछ करीब 40 से 50 सेंटीमीटर लम्बी होती है, उन पर बालों का गुच्छा-सा बना होता है। इसकी जीभ विलक्षण और काफी लम्बी होती है, करीब 40 सेंटीमीटर की, जिससे इसे नरम और सख्त चीज को पहचानने और अपना भोजन खाने में आसानी रहती है। यह पेड़-पौधों के पत्ते और फुनगियों को जीभ से लपेटकर तोड़ लेता है और बड़े चाव से खाता है।

जिराफ का कद ऊँचा और गर्दन लम्बी होने के कारण इसे पानी पीने में बहुत कठिनाई होती है। तब

यह अपनी टांगों को काफी चौड़ाई में फैलाकर ही पानी तक पहुँच सकता है। यह शाकाहारी होता है और सिर्फ पेड़ों की पत्तियां आदि ही खाता है। हरी वस्तुओं से इसके शरीर को काफी मात्रा में पानी मिल जाता है, जिससे इसको पानी की प्यास बहुत कम लगती है।

प्राकृतिक रूप से जिराफ अफ्रीकी महाद्वीप के मध्यभाग के वनों (जहाँ कागो, जायरे, तंजानिया, जाम्बिया आदि राज्य हैं) में पाया जाता है। स्वभाव से वह डरपोक, शांतिप्रिय और अहिंसक है। हल्के सुनहरी रंग, शरीर भर में फैली हुई चित्तियां और बड़ी-बड़ी आँखों के कारण यह पृथ्वी के सुन्दरतम प्राणियों में से एक है।

जिराफ के बारे में सबसे विचित्र बात यह है कि यह मूक प्राणी है। अभी तक इसे बोलते-चीखते नहीं सुना। आश्चर्य तो यह है कि शिशु जिराफ बोल सकता है। युवा होते ही उसके बोलने की शक्ति समाप्त हो जाती है। जिराफ का शरीर गर्दन से पीछे पूंछ की ओर ढलुआ होता है। इसकी पूंछ गुच्छेदार होती है जैसे चंवर।

मादा 14-15 महीने बाद बच्चा देती है। शिशु का वजन करीब 60 किलोग्राम और ऊँचाई करीब दो मीटर रहती है। वैसे वयस्क जिराफ का वजन करीब एक टन होता है। पैदा होने के बाद शिशु जिराफ करीब घंटे भर बाद ही चलने-फिरने लग जाता है। जिराफ की औसत उम्र 25 वर्ष होती है।

जिराफ झुंड में रहना पसन्द करते हैं। छोटे से झुंड में भी कम से कम 8-10 जिराफ और बड़े झुंडों में 100 तक जिराफ होते हैं।

इसकी टांगे बहुत मजबूत होती है। यह करीब 45 से 50 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है। इस प्रकार दौड़कर भी ये अपना बचाव कर लेते हैं। इसकी लात खाकर प्राणी मर सकता है। सिंह आदि

जानवरों को लात मारकर यह अपनी रक्षा करते हैं। तब इनकी टांगें पिस्टन की तरह तेज गति से चलती हैं और साथ में धूल का गुब्बार उड़ाती हैं।

इनकी खाल काफी कीमती होती है। इनकी पूंछ और पिछले पैरों की हड्डियां भी काम आती हैं। इस कारण इनका खूब शिकार किया गया। अब अफ्रीका और अन्य देशों की सरकारों ने इनके शिकार पर पाबन्दी लगा दी है ताकि इस सुन्दर जानवर की नस्ल को बचाया जा सके।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

पास बैठी किट्टी, पीकूं खरगोश को यह सब करते देख रही थी। उसको यह देखकर बहुत बुरा लग रहा था कि छोटा-सा पीकूं खरगोश ये सब काम कर रहा है।
जिस उम्र में पीकूं को स्कूल जाना चाहिए, उस उम्र में ये काम कर रहा है।
क्या सोच रही हो किट्टी?

माँ, पीकू खरगोश को जिस उम्र में पढ़ना चाहिए, वह होटल में काम कर रहा है। मैं उसकी मदद करना चाहती हूँ पर कैसे करूं, समझ में नहीं आ रहा।
यह तो बहुत अच्छी बात है किट्टी। तुम एक काम करो, होटल के मालिक से बात करो कि वह उसे रोज़ शाम को एक घंटा पढ़ने के लिए आने दे।
बहुत अच्छा माँ! यह तो बहुत बढ़िया आइडिया है। मैं अभी होटल के मालिक से बात करती हूँ।

किट्टी ने जब होटल के मालिक से बात की तो होटल का मालिक भी बहुत खुश हुआ। उसने खुशी-खुशी पीकूं को शाम को एक घंटे की छुट्टी दे दी। किट्टी हर रोज पीकूं को एक घंटा पढ़ाने लगी।

किट्टी रोज़ शाम को पीकूं खरगोश को पढ़ाती। जल्द ही पीकूं खरगोश इतना पढ़ गया कि उसे आराम से स्कूल में एडमिशन मिल गया।

दोस्तों! 14 साल से कम उम्र के बच्चों से बाल मजदूरी करवाना अपराध है। हम सबको मिलकर इस अपराध को रोकना चाहिए।

जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

- पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है।
- निरन्तर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता। **– रवीन्द्रनाथ टेगोर**
- बुद्धि और हृदय को जो सत्य लगे, वही तेरा कर्तव्य है। **– महात्मा गाँधी**
- नम्रता, मीठे वचन और सत्य मनुष्य के आभूषण होते हैं। **– संत तिरुवल्लुवर**
- अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है। **– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**
- शब्द जितने कम होंगे प्रार्थना उतनी ही उत्तम होगी। **– लूथर**
- अच्छे विचार रखना ही भीतरी सुन्दरता है। **– स्वामी रामतीर्थ**
- अच्छी पुस्तक एक महान आत्मा का अमूल्य जीवन खत है। **– मिल्टन**
- अच्छा स्वास्थ्य और एक अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं। **– पी. साइरस**
- इच्छा से दु:ख आता है, इच्छा से भय आता है। जो इच्छाओं से मुक्त है, वह न दु:ख जानता है न भय।
- अच्छे विचार सच्चाई की राह दिखाते हैं।
- उबलते हुए पानी में जिस प्रकार हम अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते, उसी प्रकार हम क्रोधी बनकर नहीं समझ सकते कि हमारी भलाई किस बात में है। **– महात्मा बुद्ध**
- दूसरों के अनुभव से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान है। **– जवाहरलाल नेहरु**
- इस सनातन नियम को याद रखो– यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखो। **– सुभाषचन्द्र बोस**
- धर्म ही एक मात्र सखा है जो मृत्यु के बाद भी साथ चलता है शेष सब मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है। धर्म के अनुसार खुद चलें इससे बढ़कर धर्म का प्रचार नहीं। **– विवेकानन्द**
- आदमी जो कुछ करता है, उससे कहीं अधिक करने की क्षमता उसमें होती है। **– वालपोल**
- अच्छे काम करने के लिए किसी बड़े मौके का इन्तजार मत करो बल्कि छोटे-छोटे मौकों से ही लाभ उठाओ। **– रिशर**
- अज्ञानी और मूर्ख व्यक्ति की संगति ही नरक है। **– उमर खैय्याम**
- खुशी तंदुरुस्ती है इसके विपरीत उदासी रोग है। **– हेली बर्टन**
- जिसे हारने का डर है, उसकी हार निश्चित है। **– नेपोलियन**
- उसी का कार्य सिद्ध होता है जो समय को विचार कर कार्य करता है। **– वृन्द**
- माता-पिता की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन जैसा दूसरा कोई भी धर्म नहीं है। **– वाल्मीकि**
- खाने और सोने का नाम जीवन नहीं। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ने का। **– प्रेमचंद**
- बच्चों को ये सिखाया जाना चाहिए कि कैसे सोचें, न कि क्या सोचें? **–मार्गरेट मीड**

बाल कहानी : दीपांशु जैन

दौलत सच्चाई की

बहुत दिन हुए, बगदाद में नसीरुद्दीन नामक एक ईमानदार आदमी रहता था। सभी उसकी बड़ी इज्जत करते थे।

एक बार नसीरुद्दीन को किसी काम से बाहर जाना पड़ा। सफर जहाज से करना था। जाने से पहले नसीरुद्दीन ने अपनी सभी जरूरी चीजें ले लीं, साथ ही एक हजार सोने की अशर्फियां भी।

नसीरुद्दीन के अच्छे और मिलनसार स्वभाव से सभी प्रभावित थे। एक यात्री से नसीरुद्दीन का बड़ा अच्छा परिचय हो गया। एक दिन बातों के दौरान नसीरुद्दीन ने अपने पास रखी एक हजार अशर्फियां उस यात्री को दिखा दीं। इतनी सारी अशर्फियां देख, उस यात्री की नीयत बिगड़ गई। वह किसी भी तरह उन अशर्फियों को हड़प लेना चाहता था। चोरी तो वह कर नहीं सकता था। जहाज में तलाशी होती तो वह आसानी से पकड़ में आ जाता।

आखिर उसने वह अशर्फियां पाने का एक उपाय सोचा। अगले दिन सवेरे-सवेरे वह चिल्लाने लगा– मैं लुट गया! मेरी एक हजार अशर्फियां जहाज में किसी ने चुरा ली... हाय, अब क्या होगा?

यह सुनकर जहाज के सभी यात्री उसके पास इकट्ठा हो गये। सारी बात सुन उन यात्रियों ने कहा– घबराओ मत! चोर होगा तो जहाज में ही। तलाशी में जिसके पास अशर्फियां निकलेंगी, उसे पकड़ लेंगे।

एक-एक कर जहाज के सभी यात्रियों के सामान की तलाशी ली गयी। अन्त में नसीरुद्दीन की तलाशी लेना बाकी रह गया। उसे देखकर जहाज के एक यात्री ने कहा– अरे, नसीरुद्दीन की क्या तलाशी

ली जाये? उन पर संदेह करना खुद को गाली देने के बराबर है।

सभी यात्रियों ने उस यात्री की बात का समर्थन किया। लेकिन खुद नसीरुद्दीन ने कहा– नहीं, जब आप लोगों ने सबकी तलाशी ली है तो मेरी भी लीजिए। इससे किसी भी किस्म का संदेह नहीं रह जायेगा।

नसीरुद्दीन की बात सुनकर वह यात्री बड़ा प्रसन्न हुआ।

नसीरुद्दीन के बहुत जोर देने पर उसकी तलाशी ली गयी लेकिन अशर्फियां न मिलीं। जहाज के कर्मचारियों ने जहाज का कोना-कोना छान मारा, लेकिन कहीं भी अशर्फियां नहीं मिलीं। सभी को विश्वास हो गया कि यात्री झूठ बोल रहा है। उधर वह मुसाफिर हैरत में था। सोच रहा था– आखिर नसीरुद्दीन की अशर्फियां गईं कहाँ?

बात आयी-गयी हो गई। सभी यात्री इस घटना को भूल गये। दो-तीन दिन बाद उस यात्री ने अकेले में नसीरुद्दीन से कहा– मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। जब आपकी तथा आपके सामान की तलाशी ली गयी तो आपके पास से अशर्फियां क्यों नहीं निकलीं?

यह सुनकर नसीरुद्दीन के होठों पर मुस्कान फैल गई। उसने कहा– मैंने अशर्फियां समुद्र में फेंक दीं।

–समुद्र में? लेकिन क्यों?– आश्चर्य से उस यात्री ने प्रश्न किया।

नसीरुद्दीन ने जवाब दिया– देखो भाई, बहुत सीधी-सी बात है। मैं तुम्हारी चालाकी भांप गया था। मेरी सच्चाई और ईमानदारी पर सबको यकीन था। तलाशी के वक्त मेरे पास अशर्फियां निकलती, तो भी मेरे कहने से लोग मेरी बात पर विश्वास कर लेते। लेकिन मेरी ईमानदारी और सच्चाई के प्रति उनके मन में शंका भी हो सकती थी। अशर्फियों का क्या, गयीं तो गयीं फिर कमा लूंगा। लेकिन थोड़े से धन के लालच में मैं सच्चाई, विश्वास और ईमानदारी की दौलत को खोना नहीं चाहता था। इसलिए मैंने ऐसा किया।

नसीरुद्दीन की बात सुन वह उनके कदमों में गिर कर फूट-फूटकर रोने लगा। नसीरुद्दीन ने उसे उठा कर गले लगा लिया और माफ कर दिया।

कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

होली के अलबेले रंग

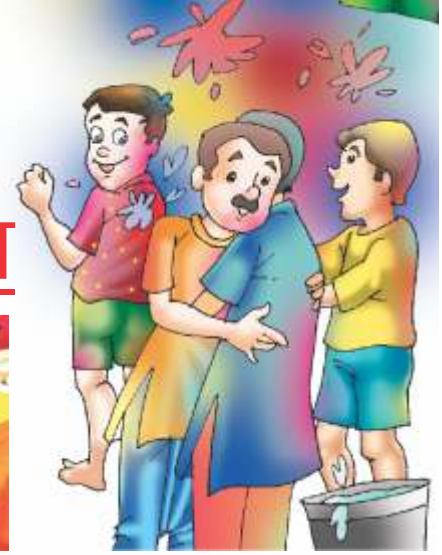

नटखट नये नवेले रंग,
होली के अलबेले रंग।

मस्ती करते, उत्साह जगाते,
होली मिलकर सभी मनाते,
रंगों से कोई बच न पाए,
ऐसी जुगत सदैव लगाते।

करते नये झमेले रंग,
होली के अलबेले रंग।

झूमते गाते धूम मचाते,
पिचकारी से रंग बरसाते,
उड़ता गुलाल–मिटता मलाल,
इक दूजे को गले लगाते।

करें कटाक्ष करेले रंग,
होली के अलबेले रंग।

होली में न शालीनता खोना,
रंग गुलाल अबीर संजोना,
कीचड़ कोलतार वार्निश से,
मन में कटुताएं मत बोना।

होते खुशियों के मेले रंग
होली के अलबेले रंग।

बाल कविता : सुनील कुमार शर्मा

होली आई

होली आई, होली आई
ले के सतरंगी रंग,
रामू, श्यामू, शीला आओ
चलो करें हुड़दंग।

आओ हिल–मिल होली खेलें
आलींगन कर वैर को भूलें,
खुशियों की लड़ियां बिखराकर
छाए नई तरंग।

सबका प्यारा त्यौहार है होली
रंगों की बौछार है होली,
मस्ती के रंगों में घुलकर
जागे नई उमंग।

पक्षी जगत (लेख) किरण बाला

गायक पक्षी

गाने वाले पक्षी ओसीन उपजाति के अंतर्गत आते हैं। इनकी स्वर तंतु एक विशेष बक्से में स्थित होती है जिसे सिरिनोई कहते हैं। यह श्वांस नली की जड़ में होता है और यहाँ यह ब्रोन्काइ को दो हिस्सों में बांटता है। सीरिन्कस एक सख्त बक्सा होती है – ध्वनि यंत्र की तरह का– जिसमें सांस बाहर फेंकते समय तंतु कंपन करते हैं। इन्हीं कंपनों से अलग–अलग तरह की आवाजें निकलती हैं। भिन्न–भिन्न पक्षियों के गले में भिन्न–भिन्न प्रकार का सीरिन्कस होता है। कुछ की आवाज़ मीठी होती है तो कुछ की कर्कश।

बुलबुल की आवाज सभी पक्षियों में सबसे अधिक मधुर होती है। बुलबुल एक प्रवासी चिड़िया है। इंग्लैण्ड में इसका गाना अप्रैल और

जून के बीच सुना जा सकता है। यहाँ भी केवल नर चिड़िया ही गाती है। यह गाना पास के किसी पेड़ से मादा को पुकारने और रिझाने के लिए गाया जाता है। दिन हो या रात, जब इसकी इच्छा होती है, वह गाती है। नर बुलबुल का गाना तब तक चलता रहता है जब तक मादा अंडे देती है। कवियों की तो यह खास रही है।

बुलबुल को फुलवारी बहुत पसंद है। यहाँ आकर जब वह चहकती है तो ऐसा लगता है कि कोई मीठे स्वर से सीटी बजा रहा हो। बस, तब इन्हें सुनते रहो।

बसंत ऋतु के आते ही कोयल की कुहू–कुहू की मधुर आवाज सुनाई देने लगती है। यह ऋतु नर और मादा कोयल की मिलन ऋतु होती है। इस मौसम में नर कोयल मीठी

आवाज निकालकर मादा कोयल को आकर्षित करता है। कोयल का कूकना मिलन ऋतु के समाप्त होते ही बंद हो जाता है। मार्च से जुलाई तक यह खूब गाती है।

पंडुक एक घरेलु चिड़िया है। कू–कू करके गाना इसका स्वभाव है। यह ग्रीष्म ऋतु में गाती है। ये अपना गला फुलाकर गाती है।

वर्षा ऋतु में 'पीउ–पीउ' की आवाज करते हुए जिस चिड़िया को आपने गाते सुना होगा, वह है पपीहा। वर्षा ऋतु में यह खूब गाता है।

श्यामा भी गाने वाली चिड़िया है। यह तरह–तरह के स्वर निकालती है। स्वरों में उतार–चढ़ाव, लय तान है। सीटी के रूप में निकली उसकी आवाज कर्णप्रिय होती है। जब एक बार गाना शुरू करती है तो फिर गाती ही रहती है।

कुछ पक्षी गाते भले ही न हों पर चहचहाते अवश्य हैं। चिड़ियों की चहचहाहट तो आपने सुनी होगी। चिड़ियों की अलग–अलग किस्मों की आवाजें अलग–अलग होती हैं। ये मिलन के मौसम में अपने साथी को बुलाने के लिए चहचहाती हैं। आमतौर पर नर चिड़िया ही चहचहाती है।

कबूतर भले ही सलीके से गा न पाता हो लेकिन गूटर गूं, गूटर गूं करता हुआ नाचता–गाता रहता है।

मुर्गी कुकड़ू–कूं की आवाज निकालती है। जो भोर होने का प्रतीक है।

तोता गाता भले ही न हो लेकिन इंसान की बोली की नकल करके उसे दोहराता अवश्य है।

पढ़ो और हँसो

शिवानी : पलक, इतने दिन कहाँ थी?

पलक : मुझे मलेरिया हो गया था।

शिवानी : तो अब कैसी है?

पलक : मैं तो ठीक हूँ लेकिन वो मच्छर जरूर बीमार होगा। जिसने मुझे तब काटा था जब मुझे मलेरिया हो चुका था।

चिंटू : यार, आज तो एक रुपये में तीन अमरूद मिल गये।

पिंटू : वो कैसे?

चिंटू : एक रुपये का एक अमरूद उसने दिया। एक मैं उठाकर भागा और एक उसने मुझे फेंक कर मारा।

पप्पू : यार! क्लास में मैडम जी को जोड़ नहीं आता।

सप्पू : क्या हुआ?

पप्पू : मैडम जी कल पढ़ा रही थीं– दो और तीन पांच होते हैं। वे आज पढ़ा रही थीं– चार और एक पांच होते हैं।

रवि जब तुम मेरे बराबर हो जाओगे तो क्या करोगे?– एक मोटे आदमी ने रवि से पूछा।

जी पतला होने की कोशिश करूंगा।– रवि ने जवाब दिया।

– पूजा संगतानी (बालोतरा)

सोनू : तुम्हारा घर कहाँ है?

मोनू : महालक्ष्मी सिनेमाघर के सामने।

सोनू : महालक्ष्मी सिनेमाघर कहाँ है?

मोनू : मेरे घर के सामने।

सोनू : और ये दोनों कहाँ हैं?

मोनू : एक-दूसरे के आमने सामने।

राहगीर : यह सड़क कहाँ जाती है?

दुकानदार : यह सड़क कहीं नहीं जाती। चौबीसों घंटे यहीं रहती है।

राजू : (कमल से) मुझे एक अच्छी नौकरी मिल गई है।

कमल : तब तो तुम्हें पैसे भी अच्छे मिलते होंगे?

राजू : पैसे तो नहीं, पर अधिकार मुझे खूब मिल रहे हैं। मैं छोटे से छोटे और बड़े से बड़े आदमी को भी नीचे उतार सकता हूँ।

कमल : ऐसा क्या करते हो?

राजू : मैं लिफ्टमैन हूँ।

थानेदार: जब तुम्हारी मोटरसाइकिल चोरी हुई उसी समय तुमने रिपोर्ट क्यों नहीं लिखवायी?

व्यक्ति : हुजूर, मैंने सोचा कि चोर मोटरसाइकिल की मरम्मत करवा ले तभी रिपोर्ट लिखवाऊँ।

– राधा नाचीज़ (नई दिल्ली)

पहला दूधिया : इस बार मेरे गाँव में इतनी ठंड पड़ी कि लोग अपनी गाय-भैंसों को गर्म कपड़े पहनाने पड़े।

दूसरा : मेरे गाँव में तो ठंड के कारण गाय-भैंसों ने दूध ही देना बन्द कर दिया।

तीसरा : छोड़ो न! मेरे गाँव में इतनी ठंड पड़ी कि गाय-भैंसों ने दूध की जगह आइसक्रीम देना शुरू कर दिया।

गैरेज मालिक को जोर-जोर से खर्राटे लेते देख उसके स्टाफ को सोने में दिक्कत हो रही थी। जिस कारण उन्होंने मालिक के नाक में 'मोबिल आयल' डाल दिया। थोड़ी देर बाद जब मालिक जगा तो स्टाफ पर काफी गुस्सा होने लगा।

बेचारा स्टाफ डरते-डरते बोला– आप ही तो कहते हैं कि किसी भी चीज में से आवाज निकले तो उसमें 'मोबिल' डाल देना चाहिए।

– चमन-अमन (27ए, अनूपगढ़)

एक भोला-भाला देहाती आदमी पहली बार सिनेमा देखने गया, वहाँ पर जब पिक्चर शुरू हुई तो सब बत्तियां बुझा दी गईं। वह आदमी दौड़ा-दौड़ा मैनेजर के पास गया और बोला– क्या हम उल्लू हैं जो अंधेरे में सिनेमा देखेंगे?

– सुशान्त सागर (मोतीहारी)

एक व्यक्ति मिठाई की दुकान पर गया। उस व्यक्ति ने पूछा– यह क्या है?

दुकानदार ने जवाब दिया– खाजा।

उस व्यक्ति ने उसे खा लिया। जब वह जाने लगा तो दुकानदार ने उससे पैसे मांगे तो उस व्यक्ति ने अपना स्पष्टीकरण इस तरह दिया– तुमने ही तो कहा था खा जा। अब पैसे किस बात के?

विक्की : (सोनू से) हमारा कुत्ता 'जॉन' इतना समझदार है कि वह सुबह हॉकर के आते ही अखबार उठाकर हमारे पास लाता है और उसके बाद ही 'मॉर्निंग वॉक' पर जाता है।

सोनू : हाँ मुझे पता है।

विक्की : लेकिन तुम्हें कैसे पता?

सोनू : हमारे कुत्ते माइकल ने ही मुझे सारी बात बताई है। जॉन उसी के साथ तो 'मॉर्निंग वॉक' पर जाता है।

पिताजी : बेटा, तुम्हें परीक्षा में कितने अंक मिले हैं?

बेटा : भैया से बीस कम।

पिताजी : भैया को कितने मिले हैं?

बेटा : बीस।

– सुदीक्षा कुकरेजा (वडसा)

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

होली-सफाई

दिन भर होली खेलने के बाद शाम को होली–मिलन का कार्यक्रम रखा गया था। फुरसत के समय शाम को मोहल्ले के सब लोग निर्धारित स्थल पर हल्का–फुल्का मनोरंजन करने एकत्रित हुए।

पहले बच्चों की फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें तमाम बच्चों ने भाग लिया। इसके बाद मंच से कार्यक्रम–संचालक भैरवनाथ ने घोषणा की– "शालीनतापूर्वक होली मनाने के लिए सभी शहरवासियों को धन्यवाद। साथियों! आज के कार्यक्रम का समापन हम एक 'लकी–ड्रा' से करने जा रहे हैं। सभी के नाम की पर्चियां हमारे पास हैं... उनमें से किसी एक विजेता को पुरस्कार से नवाजा जाएगा।" घोषणा सुनकर कुछ जाते हुए लोग ठिठक गये।

एक बड़े टब में नामों की समस्त पर्चियां उड़ेल दी गईं फिर अच्छी तरह उलट–पुलट कर मिलाया गया। फिर एक पालतू तोते से एक पर्ची उठवाई गई। पर्ची हाथ में लिए भैरवनाथ मुस्कान बिखेरते हुए बोले– आज के भाग्यशाली विजेता हैं; हमारे मोहल्ले के पीलू भाई। यहाँ पहुँचिए पीलूभाई।

उत्साह में भरकर तेज कदमों से पीलूभाई स्टेज पर पहुँचे और दर्शकों को अभिवादन कर खड़े हो गये। दर्शकों ने करतल ध्वनि से उनके अभिवादन का उत्तर दिया।

–बधाई हो पीलूभाई आप चुने गये हैं भाग्यशाली विजेता।– भैरवनाथ बोले

–बताइए फिर क्या दे रहे हैं?– पीलूभाई ने मुस्कुराते हुए पूछा।

–आपको दो पर्चियां उठानी पड़ेंगी, उसमें लिखा होगा आपके भाग्य का फैसला। पहले यहाँ से एक पर्ची उठाइए।– भैरवनाथ ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा।

पीलूभाई ने हवा में लहराते हुए हाथ जोड़कर भगवान को प्रणाम किया और एक पर्ची उठाकर

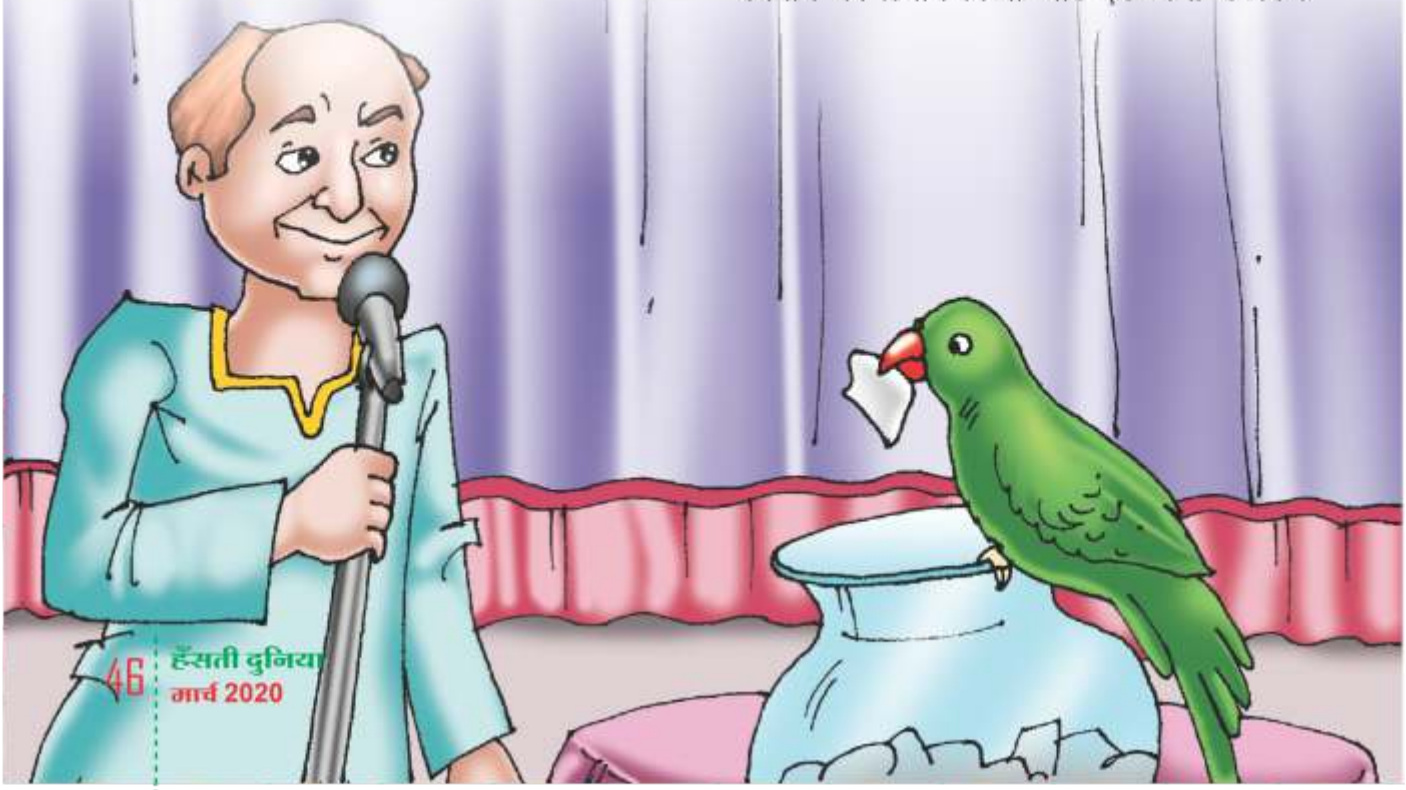

भैरवनाथ को पकड़ा दी। भैरवनाथ चहकते हुए बोले– बधाई हो पीलूभाई आपको पांच सौ रुपये का नकद ईनाम मिला है।

पीलूभाई हँसते हुए बोले– लाइए फिर।

–यह लीजिए– कहते हुए भैरवनाथ ने पांच सौ का नोट उसको थमा दिया। पीलूभाई नोट लेकर खिसकने लगे तो भैरवनाथ ने टोक दिया।– अभी कहाँ चल दिए श्रीमान्! मैंने कहा था न कि आपको दो चिट उठाना है... अभी एक बाकी है वह भी उठाइए।

उत्साहित होकर पीलूभाई ने एक पर्ची उठाई और संचालक को पकड़ा दी। भैरवनाथ पर्ची खोलकर पढ़ते हुए मुस्कुरा दिये– 'पीलूभाई आप बहुत परोपकारी लगते हैं।'

अपनी तारीफ सुनकर पीलूभाई अचकचा गये और भैरवनाथ को घूरते हुए बात का मतलब समझने की कोशिश करने लगे।

भैरवनाथ मुस्कुराते हुए बोले– देखिए, इस पर्ची में लिखा है कि जितना पुरस्कार आपको मिला है उसे दुगुना करके कमेटी को वापस कर दीजिए उससे होली महोत्सव के दौरान जो गली–मोहल्ले में गंदगी हुई है उसकी सफाई कराई जाए... समझे पीलूभाई, यानि आपको पांच सौ रुपये ईनाम के तथा पांच सौ रुपये अपने पास से मिलाकर वापस लौटाना है।

पीलूभाई असमंजस की स्थिति में दिखे। भैरवनाथ ने प्यार से समझाया– पीलूभाई यह तो आपको करना ही पड़ेगा। आपके ही मोहल्ले का काम है।

– बचने का कोई उपाय न देख, बुझे मन से, पीलूभाई हजार रुपये निकालकर कार्यक्रम संचालक को सौंप दिये।

दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

जनवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 जय मनवानी 9 वर्ष
ग्रीन पॉर्क सोसाइटी, म.नं. 44,
अंकलेश्वर महादेव रोड, गोधरा (गुजरात)

2 आशिता गौतम 11 वर्ष
लम्बरदार का पुरवा, सौरमऊ,
शिवनगर, सुलतानपुर (यू.पी.)

3 विवेक कुम्हार 11 वर्ष
राजमाता धर्मशाला के पीछे, कुम्हारवाडा,
सिरोही (राजस्थान)

4 ओम सोमजनी 12 वर्ष
योगेश्वर सोसाइटी, सोमनाथ नगर,
गोधरा (गुजरात)

5 दिशा भगतानी 14 वर्ष
विकास विहार कॉलोनी,
महादेव घाट रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सिमरन चोपड़ा (फगवाड़ा), सेफाली गौतम (सुरैला), वंशिका (धनीपखर, बिलासपुर), नवदिशा (लोकनायकपुरम, दिल्ली), प्रतिभा, वरुण यादव (कृष्णा कॉलोनी, गुरुग्राम), गुरुप्रीति (नांगलोई, दिल्ली), हर्षित गुप्ता (राजपुरा मंगोत्रियन, जम्मू), लविना (धुन्धरी, अजमेर), वंश कुमार (मनोहर नगर, कानपुर), वैभव किशोर (डांगोली, बांगर), साक्षी (रावतसर), रेयान छाबड़ा (कोटकपूरा), यवनिका (भरमोटी कलां), नम्रता (बुढलाडा), अक्षद (कृष्णा नगर, अमरावती), दीपिका (बिलासपुर), खुशी वधवा (नकोदर), सुरभि (मंडी डबवाली), नितिन चंद्रा (अल्मोड़ा), विभोर (बरनाला), विकास कुमार (काशीपुर), भारती सोनी, अनीशा रहेजा, आकृत, मुस्कान, आस्था, हर्षिता, परी, कनिका, हरप्रीति, मयंक, कुनाल, साहिल, जिया, रविश मधवानी, विधिता, राकेश रंजन, संदीप, शांति सोनी, समर्पिता, पायल (रायपुर), यशिका, अभय, लहर, दक्ष, नकुल, कृष्णा, विराज, भूमि कटारिया, कुश, परी, आयुषी असनानी, यश, देवांग, कार्तिक, निशिका, आरती शाह, यश, कृष्णा, सुमित, शिव नितेश, कुश, प्रनीत, हार्दिक (गोधरा)।

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 मार्च तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका की जितनी भी तारीफ की जाए कम है। मैं हर महीने पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार करता हूँ क्योंकि हँसती दुनिया तरह-तरह का ज्ञान और मनोरंजक करवाती है। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन पढ़कर मन पुलकित हो उठता है।

– पूर्णसिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

हम हँसती दुनिया के पुराने पाठक हैं। हम इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करते हैं। यह पत्रिका जीवन के लिए उपयोगी, व्यवहारिक ज्ञान व शिक्षा प्रदान करती है। इस पत्रिका को जन्मदिन के उपहार के रूप में देकर इसका प्रचार-प्रसार बढ़ाया जा सकता है। परमात्मा से हमारी यही कामना है कि यह पत्रिका सदैव उन्नति की ओर अग्रसर रहे।

– स्वीटी हशमतराय (इन्दौर)

हमें हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे हँसती दुनिया में कविता, कहानियां, चुटकले बहुत पसन्द हैं।

'पढ़ो और हँसो' पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाती हूँ। पढ़कर हम सभी हँसते हुए लोटपोट हो जाते हैं।

हँसती दुनिया मनोरंजन कराने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। मेरे परिवार के सभी सदस्यों को हँसती दुनिया बहुत पसन्द है। हँसती दुनिया को जो कोई भी पढ़ता है। इसकी प्रशंसा करता है।

– ज्योति शर्मा (चार के.एस.पी.)

हँसती दुनिया को मैं और मेरा परिवार इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका हँसती दुनिया पूरी दुनिया में अपने आप में अकेली पत्रिका हे।

हर माह की शुरुआत में ही हमें पत्रिका का इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया के सभी तथ्य हमें प्रेम, शान्ति एवं अच्छे व्यवहार करना सिखाते हैं।

– मनोज कुमार (दिल्ली)

Form - IV

(See Rule - 8)

1. Place of Publication :
   Sant Nirankari Satsang Bhawan,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi-110009
2. Periodicity of Publication :
   Monthly
3. Printer's Name :
   C. L. Gulati
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian

Address :
Sant Nirankari Satsang Bhawan
Sant Nirankari Colony
Delhi-110009

4. Publisher's Name :
   C. L. Gulati
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian

Address :
Sant Nirankari Satsang Bhawan
Sant Nirankari Colony
Delhi-110009

5. Editor's Name :
   Vimlesh Ahuja
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian

Address :
H.No. 1/43, Sant Nirankari Colony,
Delhi - 110009

6. Name & Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.
   Sant Nirankari Mandal,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009

I, C. L. Gulati, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 1-3-2020

— C. L. Gulati
Publisher

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)